सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 207, नई दिल्ली । रविवार, 06अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 सत्येंद्र जैन की जमानत पर 15 अक्टूबर को आएगा फैसला...
06 मिलावटी आहार से बढ़ती बीमारियां
08 राजधानी भुबनेस्वर् में दुर्घटनाएं; हाइव ने कार को टक्कर मार दी

# नवंबर तक बनकर तैयार हो जाएगा पंजाबी बाग फ्लाईओवर, लाखों दिल्लीवासियों को होगी सहूलियत

**पंजाबी बाग फ्लाईओवर नवंबर तक बनकर तैयार हो जाएगा जिससे लाखों दिल्लीवासियों को आवागमन में आसानी होगी। यह फ्लाईओवर वेस्ट दिल्ली इंटीग्रेटेड ट्रांजिट कॉरिडोर डेवलपमेंट के तहत बन रहा है और इसकी लंबाई 1.1 किलोमीटर है। फ्लाईओवर के दोनों तरफ से छह कारें आवागमन कर सकती हैं। इस फ्लाईओवर के बनने से लोगों को यातायात जाम**

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली वालों को पंजाबी बाग फ्लाईओवर से गुजरने के लिए अभी एक महीने का और इंतजार करना होगा। फ्लाईओवर के दोनों तरफ की सड़कें बन गई हैं, लेकिन दोनों तरफ पुट्टी, रेलिंग, डिवाइडर पर हरियाली सहित अन्य काम बाकी हैं। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि फ्लाईओवर का शेष कार्य अक्टूबर के आखिर तक पूरा हो जाएगा।

विधायक शिवचरण गोयल ने पंजाबी बाग से राजा गार्डन तक फ्लाईओवर के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि फ्लाईओवर का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। इसे नवंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह फ्लाईओवर दिल्ली की सड़कों को सुगम बनाने और ट्रैफिक जाम की समस्या को खत्म करने के दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

**इंटीग्रेटेड ट्रांजिट कॉरिडोर के तहत हो रहा विकास**

पंजाबी बाग क्लब रोड स्थित छह लेन वाले फ्लाईओवर को वेस्ट दिल्ली इंटीग्रेटेड ट्रांजिट कॉरिडोर डेवलपमेंट के तहत तैयार किया जा रहा है, जिसकी लंबाई 1.1 किलोमीटर की है। फ्लाईओवर के एक तरफ की चौड़ाई 11.50 मीटर है, जबकि दोनों तरफ की चौड़ाई 23 मीटर है।

फ्लाईओवर के दोनों तरफ से छह कारें आवागमन कर सकती हैं। मोती नगर के विधायक शिवचरण गोयल ने शुक्रवार को पंजाबी बाग फ्लाईओवर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने यहा चल रहे निर्माण कार्यों को देखा और इंजीनियर से बातचीत की।

**लाखों दिल्लीवासियों के लिए वरदान साबित**

उन्होंने कहा कि 308 करोड़ रुपये की लागत से फ्लाईओवर को तैयार किया जा रहा है। यह फ्लाईओवर लाखों दिल्लीवासियों के लिए एक वरदान साबित होगा, खासकर उन लोगों के लिए जो पंजाबी बाग और राजा गार्डन के बीच आवागमन करते हैं। यह बनने से लोगों को यातायात जाम से निजात मिलेगी। साथ ही समय की भी बचत होगी। प्रदूषण के स्तर में भी कमी आएगी, जिससे पर्यावरण को राहत मिलेगी। दिल्लीवासी जल्द ही इस फ्लाईओवर का लाभ उठा पाएंगे।

## दिल्ली मेट्रो के गोल्डन लाइन को लेकर आया अपडेट, छतरपुर मंदिर तक दूसरी सुरंग का निर्माण पूरा

**नई दिल्ली।** फेज चार में निर्माणाधीन गोल्डन लाइन (तुगलकाबाद-एरोसिटी) पर भूमिगत मेट्रो कॉरिडोर के लिए छतरपुर से छतरपुर मंदिर के बीच दूसरी सुरंग का निर्माण भी पूरा हो गया है। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के प्रबंध निदेशक विकास कुमार की उपस्थिति में 97 मीटर लंबी टीबीएम (टनलिंग बोरिंग मशीन) सुरंग बनाते हुए छतरपुर मंदिर के पास बाहर निकली। इस सुरंग की लंबाई 860 मीटर है।

छतरपुर से छतरपुर मंदिर के बीच एक सुरंग का निर्माण पिछले वर्ष अगस्त में पूरा हो गया था। उस सुरंग की लंबाई 865 मीटर है। अब दूसरी सुरंग बन जाने के बाद अप और डाउन दोनों तरफ से मेट्रो परिचालन के लिए सुरंग तैयार हो गई हैं। सुरंग की गहराई 12 मीटर है। इस सुरंग के निर्माण में 613 पहले से तैयार रिंग इस्तेमाल की गई हैं। इन रिंग को मुंडका कास्टिंग यार्ड में तैयार किया गया था। एक सुरंग की चौड़ाई 5.8 मीटर है।

**66 किलोवाट के हाईटेंशन बिजली का तार हटाया गया**

डीएमआरसी का कहना है कि यह सुरंग वर्तमान यलो लाइन के एलिवेटेड कॉरिडोर के नीचे से होकर गुजर रही है। फिर भी सुरंग खोदाई के दौरान यलो लाइन पर मेट्रो का परिचालन सामान्य रूप से जारी रहा। इसके अलावा सुरंग की खोदाई के दौरान 66 किलोवाट के हाई टेंशन बिजली के तार को हटाया गया। ईपीबीएम (अर्थ प्रेशर बैलेंसिंग मेथड) का इस्तेमाल कर सुरंग का निर्माण पूरा किया गया।

**कॉरिडोर मार्च 2026 तक पूरी तरह बनकर तैयार होगा**

डीएमआरसी फेज एक के कॉरिडोर के निर्माण के दौर से ही भूमिगत कॉरिडोर के निर्माण के टीबीएम मशीन का इस्तेमाल करता रहा है। फेज तीन में करीब 50 किलोमीटर का भूमिगत कॉरिडोर बना था। तब दिल्ली में सुरंग खोदाई के लिए 30 टीबीएम मशीन लगाए गए थे। फेज चार में 40.109 किलोमीटर भूमिगत कॉरिडोर का निर्माण होना है। इसमें से 19.343 किलोमीटर हिस्सा अकेले निर्माणाधीन गोल्डन लाइन पर होगा। इस गोल्डन लाइन की कुल लंबाई 23.62 किलोमीटर होगी और यह कॉरिडोर मार्च 2026 तक पूरी तरह बनकर तैयार होगा।

**गोल्डन लाइन पर अब तक निर्मित सुरंग**

1. एयरफोर्स लांचिंग शेफ्ट से मां आनंदमयी मार्ग के बीच- 2.670 किलोमीटर
2. छतरपुर से छतरपुर मंदिर के बीच पहली सुरंग- 865 मीटर
3. छतरपुर से छतरपुर मंदिर के बीच दूसरी सुरंग- 860 मीटर
4. छतरपुर से किशनगढ़ के बीच पहली सुरंग- 1.267 मीटर
5. छतरपुर से किशनगढ़ के बीच दूसरी सुरंग- 1.273 मीटर

## श्री धार्मिक रामलीला चिराग दिल्ली में सीता स्वयंवर ने मोहा सबका मन

दिलीप देवतवाल

**नई दिल्ली।** श्री धार्मिक रामलीला दक्षिणी चिराग दिल्ली में रामलीला के लिए पूजन के दौरान इलाके के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। वहीं लीला के चौथे दिन आज 5 अक्टूबर शनिवार को अहिल्या उद्धार, सीता स्वयंवर, लक्ष्मण परशराम संवाद प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर मौजूद दर्शकों की भारी भीड़ ने अद्भुत लीला का आनंद लिया।

इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे पूर्व सांसद रमेश विधूड़ी ने लीला की सराहना करते हुए कहा कि इस लीला का मंचन अद्भुत है। इस दौरान श्री धार्मिक रामलीला दक्षिणी दिल्ली के मुख्य संरक्षक राकेश गुलिया ने बताया कि इस बार भी हर वर्ष की तरह भव्य राम लीला का आयोजन किया जा रहा है। राकेश गुलिया ने बताया कि लीला देखने के लिए हर आयु वर्ग के लोग पुरे जोश के साथ आ रहे हैं। इस अवसर दर्शकों को प्लास्टिक मुक्त वातावरण, एक पेड़ माँ के नाम व प्रदूशण से बचने के लिए विभिन्न उपायों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। लीला के दौरान अपना महत्वपूर्ण सहयोग देते हुए प्रधान आनंद जैन, सुशील गुप्ता, सुदन गुप्ता ,कपिल शर्मा,सोमनाथ मुखर्जी नागेंद्र गुलिया, धर्मेंद्र गुलिया, हर्ष गुलिया, जितेन्द्र अहलावत, प्रदीप तेवतिया, विक्रान्त गुलिया, इंद्रजीत गुलिया कार्यकारिणी सदस्यों सहित मौजूद रहे। लीला के 6 अक्टूबर रविवार के मंचन में सीता विदाई, राम राज तिलक की घोषणा व राम वनवास प्रस्तुत किया जाएगा।

## केंद्र सरकार ने रेलवे यात्रा के लिए वरिष्ठ नागरिकों के लिए रियायती सुविधाओं की घोषणा की

परिवहन विशेष न्यूज

1. पुरुष वरिष्ठ नागरिक को छूट आयु 60 वर्ष या उससे अधिक
2. महिला वरिष्ठ नागरिक राहत आयु 58 वर्ष या उससे अधिक
3. पुरुषों के लिए रेल यात्री किराये में 40% की छूट
4. महिलाओं को रेलवे किराये में 50% की छूट
5. यह छूट रेलवे की किसी भी श्रेणी की यात्री ट्रेनों जैसे मेल/ एक्सप्रेस/ राजधानी/ शताब्दी/ जनशताब्दी/ दुरंतो में उपलब्ध होगी -
6. रेलवे आरक्षण / या, सभी सामान्य टिकट बनाते समय किसी आयु प्रमाण की आवश्यकता नहीं है
7. हालांकि, ट्रेन से यात्रा करते समय रेलवे टिकट जांच (टीसी) के मामले में उम्र के प्रमाण के रूप में पैन कार्ड, आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस या फोटो के साथ कोई भी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त पत्र जमा करना अनिवार्य है।
8. वरिष्ठ नागरिक अपने रेलवे टिकट किसी भी टिकट/आरक्षण कार्यालय से या इंटरनेट के माध्यम से खरीद सकते हैं
9. रेलवे में यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस) में वरिष्ठ नागरिकों, गर्भवती महिलाओं और 45 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को स्लीपर क्लास में 6 बर्थ, एसी-3, एसी-2 में 3 बर्थ आवंटित की जाती हैं।

टी.आर.

आपके पास जितने संपर्क नंबर और समूह हैं सभी को भेजें

राजधानी/दुरंतो में 4 से अधिक बर्थ आरक्षण के लिए निर्धारित की जाएंगी

वरिष्ठ नागरिकों, बीमार यात्रियों, विकलांग यात्रियों को व्हीलचेयर निःशुल्क प्रदान की जाएगी

इसके अलावा, यदि वरिष्ठ नागरिकों को गाइड (अधिकृत कुली) की आवश्यकता होती है, तो उन्हें अलग से शुल्क देना होगा।

रेलवे प्रशासन कुछ महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों पर बीमार, विकलांग और वरिष्ठ नागरिक यात्रियों को बैटरी चालित आधुनिक व्हीलचेयर मुफ्त उपलब्ध कराएगा।

वरिष्ठ नागरिकों, विकलांगों और बीमार रेलवे यात्रियों के लिए आईआरसीटीसी विशेष यात्री मित्र सेवा/सेवाएं कई प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर शुरू की गई हैं।

रेलवे यात्री ट्रेन के प्रस्थान के बाद, यदि उपरोक्त रियायतों के लिए आरक्षित निचली बर्थ खाली हैं, तो शेष बर्थ प्रतीक्षा चार्ट में वरिष्ठ नागरिकों, विकलांग व्यक्तियों, गर्भवती महिलाओं को पहली प्राथमिकता देते हुए अन्य सभी सामान्य यात्रियों को दी जा सकती हैं। रेलवे टिकट निरीक्षण.

उपरोक्त सभी महत्वपूर्ण जानकारियों को सभी रेल यात्रियों तक पहुंचाने का अनुरोध है तथा जरूरतमंद इसका लाभ उठाएं।

# सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता: एक 'वेक अप कॉल'

डॉ. अंकुर शरण

आज हर नागरिक सड़क पर एक अनदेखी जंग लड़ रहा है – प्रदूषण से, सड़कों पर गड्ढों से, आवारा मवेशियों से, और आसमान छूती महंगाई के बीच परिवार की रोजी-रोटी के लिए भागते हुए। हर कोई खुशकिस्मत नहीं होता कि वह सुबह अपने काम पर जाए और शाम को सुरक्षित घर लौट आए।

सितंबर में फरीदाबाद, गुरुग्राम और दिल्ली में हुई घटनाओं ने सड़क सुरक्षा के प्रति हमारी लापरवाही को उजागर किया है। फरीदाबाद में, एक पानी के टैंकर ने मासूम बच्चे को कुचल दिया, वहीं अंडरपास में पानी भरने के कारण दो बैंक कर्मियों की कार सहित डूबकर मौत हो गई। कुछ ही दिनों बाद, एक युवा गुरुग्राम में बाइक राइड पर था और उल्टी दिशा से आ रही गाड़ी से टकरा कर मौके पर ही दम तोड़ दिया। दिल्ली में, कॉलेज के छात्र ड्रिंक एंड ड्राइव और गाना बदलने के चक्कर में अपनी जान गंवा बैठे। ऐसी घटनाएं बार-बार हमें चेतावनी देती हैं कि सड़क पर थोड़ी सी लापरवाही जानलेवा हो सकती है। अब समय आ गया है कि हम जागें और सड़क सुरक्षा के प्रति गंभीर हों। यह एक #WakeUpCall है – हमारी और आपकी सुरक्षा के लिए।

इन घटनाओं ने समाचार पत्रों की सुर्खियाँ तो बनाई, लेकिन उस परिवार से पूछें जिसने अपना कोई अपना खो दिया। उनके लिए यह जंग वहीं जारी रहती है।

सड़क सुरक्षा के लिए किसी पर दोषारोपण न करें, बल्कि जो भी आप कर सकते हैं, उसे करें। हर कदम मायने रखता है। सचेत रहें, सतर्क रहें और अपनी तथा दूसरों की जान बचाएं। सड़क पर छोटी-छोटी गलतियाँ भी बड़े हादसों का कारण बन सकती हैं। 'जागो' और अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी खुद उठाओ। याद रखें, सुरक्षित रहना ही असली जीत है। इस जागरूकता के साथ जीएं कि आपकी सतर्कता कई जिंदगियों को बचा सकती है।

**सड़क पर जारी जंग**

हर दिन लाखों लोग सड़क पर उतरते हैं, लेकिन कितने सुरक्षित लौटते हैं, यह कहना मुश्किल है। यह जंग केवल एक दिन की बात नहीं है, बल्कि एक निरंतर संघर्ष है।

सड़क पर गड्ढे, तेज रफ्तार वाहन, उल्टी दिशा से आने वाले वाहन, और सड़क पर चलने वाले मवेशी – यह सब मिलकर हमारे जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। लोग रोज़मर्रा के कामों के लिए निकलते हैं, लेकिन हर कोई घर वापस लौटने में सक्षम नहीं होता।

**वेक अप कॉल: सड़क सुरक्षा पर ध्यान दें**

अब समय आ गया है कि हम सब इस समस्या को गंभीरता से लें। शांति से जीने का एकमात्र तरीका यही है कि हम सड़क सुरक्षा के प्रति मजबूती से खड़े हों। हमें सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक नियमों का पालन करना होगा और दूसरों को भी जागरूक करना होगा।

यह जंग तभी खत्म होगी जब हम सब मिलकर सड़क सुरक्षा के प्रति सजग होंगे। हर वाहन चालक, पैदल यात्री और यातायात पुलिसकर्मी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। अगर हम आज नहीं जागे, तो कल और भी भयानक हो सकता है।

इस 'वेक अप कॉल' का उद्देश्य है कि हम सड़क सुरक्षा को केवल नियमों तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

**प्रेरणात्मक शृंखला: जागरूक बनें, जिम्मेदार बनें**

इस शृंखला के माध्यम से हम आपको सड़क सुरक्षा से जुड़े वास्तविक जीवन के उदाहरणों और प्रेरणादायक कहानियों से परिचित कराएंगे। इन कहानियों में उन परिवारों की आवाज़ होगी जिन्होंने सड़क पर अपनों को खोया है, और उन लोगों की भी जो सड़क सुरक्षा के लिए खड़े हुए हैं और दूसरों को बचाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

हमारा उद्देश्य है कि हर नागरिक इस लड़ाई में शामिल हो और सड़क सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाए। आइए, इस जागरूकता अभियान का हिस्सा बनें और समाज में सकारात्मक बदलाव लाएं।

"यह जंग किसी एक की नहीं, हम सबकी है। आइए, मिलकर इस जंग को जीतें और सड़कों को सुरक्षित बनाएं।"

roadsafetysquad@gmail.com
X@RoadSafetySquad

# बिना लहसुन-प्याज की ग्रेवी बनाने के लिए अपनाएं 5 टिप्स, स्वाद और रंगत में भी नहीं रहेगी कोई कमी

नवरात्र के दिनों में अगर आप भी प्याज-लहसुन खाना छोड़ देते हैं तो यह आर्टिकल आप ही के लिए है। दरअसल यहां हम आपको बिना लहसुन-प्याज की ग्रेवी तैयार करने के कुछ खास तरीकों के बारे में बताएंगे। खास बात तो ये है कि इन टिप्स को अपनाने से सब्जी की रंगत या स्वाद में भी कोई कमी देखने को नहीं मिलेगी।

**नई दिल्ली।** नवरात्र के पावन पर्व में व्रत रखने वाले लोग अक्सर प्याज और लहसुन का सेवन नहीं करते हैं। ऐसे में, स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन बनाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है, लेकिन चिंता की बात बिल्कुल नहीं है क्योंकि इस आर्टिकल में हम आपको बिना प्याज-लहसुन के ग्रेवी ( Garlic Onion Free Gravy ) बनाने के कुछ आसान तरीके बताने जा रहे हैं, जिनकी मदद से किसी डिश के स्वाद में भी चार चांद लगाए जा सकते हैं। आइए जानें।

**दही का इस्तेमाल**

बिना लहसुन-प्याज के सब्जी बनानी है, तो अब आपको टेंशन लेने की जरूरत बिल्कुल नहीं है क्योंकि इस मामले में दही का इस्तेमाल काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले दही को ब्लेंड करके आपको इसमें हरी मिर्च, धनिया, जीरा पाउडर, हल्दी और नमक मिलाना होगा। यकीन मानिए, यह मिश्रण आपकी सब्जी को एक अनोखा स्वाद देगा।

**टमाटर का पेस्ट**

प्याज-लहसुन के बिना सब्जी की रंगत और स्वाद से समझौता नहीं करना चाहते हैं तो आप टमाटर का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। इसके लिए टमाटर को पीसकर उसमें थोड़ा-सा तेल, जीरा, हींग, और सूखे मेवे डालकर पकाएं। यह पेस्ट आपकी ग्रेवी को गाढ़ा और स्वादिष्ट बनाने में मदद करेगा।

**नारियल का दूध**

नारियल के दूध से ग्रेवी बनाने के लिए आपको इसके साथ हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, और लाल मिर्च पाउडर लेना होगा। इसके बाद एक पैन में नारियल का दूध डालकर उबाल लें। इसमें सभी मसाले डालकर अच्छी तरह मिला लें। बस फिर यह ग्रेवी आपकी सब्जी को एक क्रीमी टेक्सचर देने के साथ-साथ स्वाद में भी चार चांद लगा देगी।

**सूखे मेवों का यूज**

बादाम, काजू, किशमिश जैसे सूखे मेवों के साथ हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, लाल मिर्च पाउडर को मिलाकर भी आप बिना लहसुन-प्याज के टेस्टी और गाढ़ी ग्रेवी तैयार कर सकते हैं। इसके लिए सूखे मेवों को भूनकर पीस लें और इस पाउडर को अपनी सब्जी में डालकर अच्छी तरह मिला लें। यह ग्रेवी आपकी सब्जी को एक रिच और नट्टी टेस्ट देने में काफी मदद करेगी।

**मसालों का जादू**

जीरा, धनिया, हल्दी, लाल मिर्च, गरम मसाला जैसे मसालों का इस्तेमाल करके भी आप बिना प्याज-लहसुन के अपनी ग्रेवी को स्वादिष्ट बना सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले एक पैन में तेल गर्म करें और उसमें जीरा डालें, फिर इसमें सभी मसाले डालकर अच्छे से भून लें और इस मिश्रण को अपनी सब्जी में डालकर अच्छी तरह मिला लें।

# मेराघोसला: चिड़ियों के घर बनाएं और उन्हें भोजन दें

चिड़ियों और छोटे पक्षियों के लिए सुरक्षित और सुंदर आवास बनाने का काम अब आपके हाथों में है। MeraGhosla.com क्लब ने युवाओं से आह्वान किया है कि वे नन्हे-नन्हे पंखों वाले दोस्तों के लिए घर बनाएं और उन्हें भोजन दें। इस पहल का उद्देश्य शहरीकरण के कारण घटती चिड़ियों की संख्या को बढ़ावा देना और प्रकृति से जुड़ाव को फिर से स्थापित करना है।

आप भी इस नेक कार्य में भागीदार बन सकते हैं। चिड़ियों के लिए घर बनाएं, उन्हें नियमित रूप से भोजन दें और उनकी देखभाल करें। इससे न केवल पर्यावरण को संतुलन मिलेगा, बल्कि आपको भी प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों का एहसास होगा।

**अपनी कहानी साझा करें**

अगर आपने भी पक्षियों के संरक्षण में कोई विशेष प्रयास किया है, तो अपनी कहानी, कविता, या कलाकृति हमें भेजें। आपका अनुभव दूसरों को भी प्रेरित कर सकता है।

ईमेल भेजें: indiangreenbuddy@gmail.com

यह अभियान 'ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ' द्वारा समर्थित है, जो पक्षियों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। तो आइए, हम सब मिलकर छोटे पक्षियों के लिए एक सुंदर और सुरक्षित दुनिया बनाएं!

अब आप भी 'मेरा घोसला क्लब' का हिस्सा बनें और अपने अनोखे योगदान से प्रकृति को सजाएं।

# PCOS पीड़ित महिलाओं को भूलकर भी नहीं खाना चाहिए ये फूड्स, आज ही करें डाइट से बाहर

PCOS यानी पॉली सिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम महिलाओं में होने वाली एक गंभीर समस्या है जिससे इन दिनों कई महिलाएं पीड़ित हैं। इसकी वजह से उन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में इसके लक्षणों को मैनेज करने के लिए खानपान का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। PCOS के दौरान कुछ फूड्स को खाने से परहेज करना चाहिए।

**नई दिल्ली।** PCOS यानी पॉली सिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम वयस्क महिलाओं में होने वाला एक प्रकार का हार्मोनल डिसऑर्डर है। PCOS चार मुख्य हिस्सों को प्रभावित करता है, इंसुलिन रेजिस्टेंस, हार्मोनल बदलाव, हाई बॉडी फैट, रिप्रोडक्शन के लिए इस्तेमाल होने वाले हार्मोन पर असर। ऐसे में इस दौरान सबसे बड़ी समस्या जो उभर कर सामने आती है वो है वज़न बढ़ने की।

इसलिए PCOS में वज़न कंट्रोल करना ही सबसे अहम कदम हो जाता है। PCOS में नट्स और सीड्स जैसे हेल्दी फैट, हरी सब्जियां, फल, बेरी, साबुत अनाज, ओमेगा थ्री फैटी एसिड युक्त साल्मन फिश, काबुली चना, राजमा जैसे आहार लेने से हार्मोनल संतुलन सही होता है और संपूर्ण स्वास्थ लाभ मिलता है, लेकिन इस दौरान क्या नहीं खाना चाहिए, इस बात की जानकारी होना भी जरूरी है। आइए जानते हैं कि PCOS के दौरान न खाएं ये फूड्स-

**कॉफी**

कॉफी में मौजूद कैफीन शरीर में कोर्टिसोल लेवल के साथ छेड़छाड़ करता है, जिससे हार्मोनल असंतुलन होता है। एक सीमित मात्रा में कॉफी का सेवन करें। इसलिए PCOS में कॉफी से परहेज करें।

**मैदा और चीनी**

मैदा युक्त नमकीन, ब्रेड, पास्ता, पेस्ट्री, कुकीज़, बिस्किट आदि तेजी से शुगर लेवल स्पाइक होता है। इससे वेट गेन तो होता ही है साथ ही इंसुलिन की कार्यशैली प्रभावित होती है जो कि PCOS के लक्षणों को ट्रिगर करता है। ऐसे में जितना संभव हो इससे दूर रहें।

**प्रोसेस्ड फूड**

प्रोसेस्ड फूड्स सेहत के लिए कई तरीकों से हानिकारक होता है। इसमें ट्रांस फैट पाए जाते हैं, जिससे इंफ्लेमेशन के साथ इंसुलिन रेजिस्टेंस भी होता है और ये PCOS के लक्षण को बढ़ावा देता है।

**एडेड हार्मोन के साथ डेयरी प्रोडक्ट**

आर्टिफिशियल हार्मोन से ट्रीट किए जानवरों से निकला दूध महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन पैदा कर सकता है। यह PCOS की समस्या को बढ़ा सकता है, इसलिए ऑर्गेनिक या प्लांट बेस्ड डेयरी प्रोडक्ट चुनें।

**सोए**

सोए और फाइटोएस्ट्रोजन युक्त फूड्स का सेवन करने से भी हार्मोनल असंतुलन पैदा हो सकता है जिससे PCOS को बढ़ावा मिलता है।

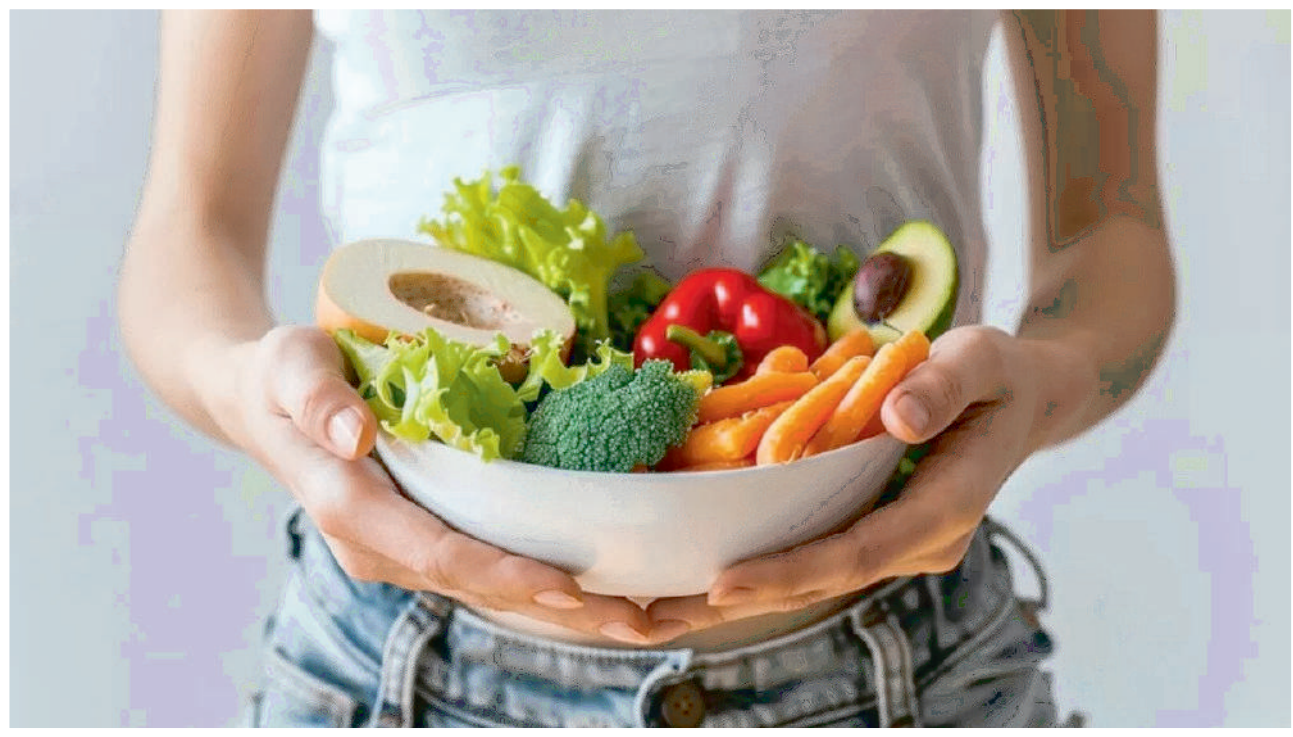

# बस मार्शलों को लेकर हाई-वोल्टेज ड्रामा; भाजपा विधायक के पैरों में गिरे आम आदमी पार्टी के मंत्री, मुख्यमंत्री आतिशी ने उठाया चौंकानेवाला कदम

परिवहन विशेष न्यूज

बस मार्शलों की बहाली के लिए LG साहब से मिलने जाने के दौरान CM आतिशी ने कहा दिल्ली में नियुक्ति का पूरा अधिकार उपराज्यपाल के पास है लेकिन इसके बाद भी BJP ने कहा कि मार्शलों की बहाली के प्रस्ताव कैबिनेट में पास किया जाए। इसके बाद हमने तुरंत ही कैबिनेट मीटिंग बुलाई और बस मार्शलों की बहाली का प्रस्ताव कैबिनेट ने हाथों हाथ पास किया।

**नई दिल्ली।** दिल्ली सरकार ने बस मार्शल्स की नियुक्ति को लेकर कैबिनेट नोट पास कराया है। इस नोट में मार्शल को तुरंत बहाल करने की मांग की गई है। इस नोट को लेकर सीएम आतिशी अपनी कैबिनेट मंत्रियों के साथ एलजी आवास की तरफ निकलीं। इससे पहले एलजी के पास जाने के मुद्दे पर जमकर राजनीति हुई।

वहीं राजभवन जाने के मुद्दे पर बीजेपी विधायकों के भागने का आरोप लगा। दिलीप पांडेय ने कहा कि बस मार्शलों के लिए दिल्ली सरकार द्वारा कैबिनेट नोट पास होने के बाद भाजपा वाले फिर भागने के फिराक में थे, जिन्हें रोकने के लिए हमें जमीन पर लोटना पड़ा। गेट पर घेर कर फिर रोक पाएं उन्हें हम। अब एलजी हाउस की तरफ रवाना हैं हम लोग! आज हम लोग बस मार्शल्स के लिए न्यायोचित रोजगार लेकर ही दम लेंगे। इंकलाब ज़िंदाबाद।'

**विजेंद्र गुप्ता की गाड़ी में बैठकर CM आतिशी पहुंचीं राजभवन**

वहीं, बस मार्शलों पर दिल्ली कैबिनेट ने अपनी पीसी निरस्त कर दी है। मुख्यमंत्री आतिशी के नेतृत्व में पूरी कैबिनेट एलजी से मिलने के लिए राज निवास के लिए निकली, कई विधायक भी साथ गए हैं। वहीं मनीष सिसोदिया ने बताया- दिल्ली के बस मार्शलों की नौकरी बहाल कराने के लिए नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता की गाड़ी में पांच बीजेपी विधायकों के साथ एलजी से मिलने जा रही हैं।

**प्रस्ताव लेकर एलजी साहब के पास जा रहे: CM आतिशी**

वहीं, बस मार्शलों की बहाली के लिए LG साहब से मिलने जाने के दौरान CM आतिशी ने कहा, ₹दिल्ली में नियुक्ति का पूरा अधिकार उपराज्यपाल के पास है, लेकिन इसके बाद भी BJP ने कहा कि मार्शलों की बहाली के प्रस्ताव कैबिनेट में पास किया जाए। इसके बाद हमने तुरंत ही कैबिनेट मीटिंग बुलाई और बस मार्शलों की बहाली का प्रस्ताव कैबिनेट ने हाथों हाथ पास किया और अब उस प्रस्ताव को लेकर LG साहब के पास जा रहे हैं।₹

**सीएम की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता: दिलीप पांडे**

विधायक दिलीप पांडे ने कहा कि मुझे सीएम की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता है। एलजी हाउस के गेट पर इंतजार कर रहे तीन मंत्रियों को अंदर जाने की इजाजत नहीं है, जबकि सिर्फ बीजेपी विधायकों और बीजेपी के लोगों को ही अंदर जाने की इजाजत है। यहां तक कि सीएम के निजी स्टाफ और सुरक्षाकर्मियों को भी अनुमति नहीं दी गई है। मुझे उन पर भरोसा नहीं है।

**सौरभ भारद्वाज ने दी पूरी जानकारी**

दिल्ली में भर्तियों का काम BJP के LG के पास है, लेकिन BJP विधायकों ने बस मार्शलों की अपने ही LG द्वारा बहाली कराने के लिए कैबिनेट पास कराने की बात कही। हमने उसी समय कैबिनेट की बैठक बुलाई और बस मार्शलों की बहाली का प्रस्ताव पास कर दिया। इसके बाद भी BJP विधायक विजेंद्र गुप्ता अपने ही LG साहब से मिलने को तैयार नहीं हुए। उन्होंने वहां से कई बार भागने की कोशिश की। हम उनके पैरों में लेट गये। अब LG हाउस के अंदर केवल CM आतिशी और BJP के विधायकों को जाने दिया गया है। यह गलत है, हमें आतिशी जी की सुरक्षा को लेकर चिंता है।

**राजनिवास के सामने धरने पर बैठे पूर्व बस मार्शल**

सीएम आतिशी राजभवन से निकल चुकी हैं। पूर्व बस मार्शलों के साथ आप विधायक भी राजनिवास के सामने धरने पर बैठ गए हैं। दिल्ली सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज, AAP MLAs और बस मार्शल LG निवास के बाहर धरने पर बैठे हैं।

**पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया**

पुलिसकर्मियों ने राजनिवास पर प्रदर्शन कर रहे डीटीसी के पूर्व मार्शल तथा सिविल डिफेंस के पूर्व कर्मियों को हिरासत में लिया। ये अपनी नौकरी देने और परमानेंट करने की डिमांड कर रहे थे।

# सत्येंद्र जैन की जमानत पर 15 अक्टूबर को आएगा फैसला, दलीलें खत्म होने के बाद कोर्ट ने सुरक्षित रखा निर्णय

परिवहन विशेष न्यूज

सत्येंद्र जैन की जमानत याचिका पर फैसला 15 अक्टूबर को आएगा। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने जैन की जमानत याचिका पर ईडी और जैन की दलीलें सुनने के बाद कहा कि वो याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने जैन की जमानत याचिका पर ईडी और जैन की दलीलें सुनने के बाद कहा कि वो याचिका पर अपना फैसला 15 अक्टूबर को सुनाएंगे। जैन की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता एन हरिहरन और विवेक जैन ने उनके मुवक्किल की मामले में देरी के आधार पर जमानत का अनुरोध किया।

**नई दिल्ली।** राउज एवेन्यू स्थित विशेष न्यायाधीश की अदालत ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आम आदमी पार्टी (आप) से पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन की नियमित जमानत याचिका पर दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने जैन की जमानत की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता एन हरिहरन और विवेक जैन ने उनके मुवक्किल की मामले में देरी के आधार पर जमानत का अनुरोध करते हुए दलील दी कि ईडी पिछले पांच सालों से इसकी जांच कर रही हैं और अभी तक आरोप तय नहीं हुए हैं।

**डिफॉल्ट जमानत आवेदन हाईकोर्ट के समक्ष लंबित**

हरिहरन ने कहा कि इस मामले में आगे की जांच लंबित है। उन्होंने कहा कि इस मामले में डिफॉल्ट जमानत आवेदन हाईकोर्ट के समक्ष लंबित है। उन्होंने तर्क दिया की पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया 17 माह तक हिरासत में रहे और उन्हें जमानत मिल गई। बीआरएस नेता के. कविता को पांच माह में जमानत मिल गई।

**मुवक्किल का भागने का भी कोई खतरा नहीं**

अधिवक्ता ने दलील दी कि मामले में उनके मुवक्किल को जमानत दी जाती है तो गवाहों को प्रभावित करने की कोई आशंका नहीं है और न ही उनके मुवक्किल का भागने का भी कोई खतरा है। अधिवक्ता ने दलील दी कि ईडी की ओर से शिकायत दर्ज होने के बाद यह दूसरी जमानत याचिका दायर है।

**ईडी ने वर्ष 2022 में अभियोजन शिकायत दर्ज की**

हरिहरन ने दलील दी कि प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) 2017 में पंजीकृत हुआ था। पांच साल बाद ईडी ने वर्ष 2022 में अभियोजन शिकायत दर्ज की। हरिहरन ने तर्क दिया कि सीबाआइ कहती है कि अपराध की आय 1.27 करोड़ रुपये है और ईडी कहती है कि अपराध की आय 4.68 करोड़ रुपये है। हरिहरन ने तर्क दिया कि ईडी केवल उस हिस्से की जांच कर सकता है, जिसे सीबीआइ अपराध की आय कहती है।

## ...किसी के भी पैरों में लेट जाते हैं', बस मार्शलों की नियुक्ति को लेकर केजरीवाल ने की मंत्रियों की तारीफ

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने डीटीसी बसों में मार्शलों की नियुक्ति के लिए अपने मंत्रियों की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि उनके मंत्री लोगों के काम करवाने के लिए किसी के भी पैरों में लेट जाते हैं। केजरीवाल ने एलजी साहब और बीजेपी से इस मुद्दे पर राजनीति न करने और तुरंत बस मार्शलों को नौकरी पर रखने की अपील की है।

**नई दिल्ली।** डीटीसी बस में मार्शलों की नियुक्ति को लेकर आज दिनभर ड्रामा हुआ। कैबिनेट नोट पास करने से लेकर राजभवन में सीएम आतिशी के पहुंचने तक कई घटनाक्रम देखने को मिले। वहीं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी इस पर अपनी प्रतिक्रिया दी और अपने मंत्रियों की जमकर तारीफ की। उन्होंने ट्वीट किया- मुझे गर्व है अपने मंत्रियों पर जो लोगों के काम करवाने के लिए किसी के पैरों में भी लेट जाते हैं। मेरी LG साहब और बीजेपी वालों से विनती है कि इस मुद्दे पर और राजनीति ना करें और तुरंत बस मार्शलों को नौकरी पर रखा जाए। बता दें, सौरभ भारद्वाज के विजेंद्र गुप्ता के पैरों में गिरकर राजभवन जाने के लिए मनाने का फोटो काफी वायरल हो रहा है।

**बीजेपी पूरी तरह एक्सपोज हुई: आतिशी**

वहीं राजभवन से एलजी सक्सेना से मुलाकात के बाद लौटीं आतिशी ने कहा- आज BJP का विधायक दल सचिवालय में मिलने आया। जहां हमने उन्हें विस्तार से समझाया कि दिल्ली में भर्तियों का अधिकार उनके ही LG साहब के पास है। आज बीजेपी पूरी तरह से एक्सपोज हो गई। हमने वहीं बीजेपी विधायकों और बस मार्शलों के सामने ही कैबिनेट बैठक बुलाई और उनकी बहाली और पक्की नियुक्ति का नोट पास किया।

**प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने हिरासत में लिया**

उन्होंने कहा कि इसके बाद बीजेपी विधायक अपने ही LG साहब के पास जाने को तैयार नहीं थे। उन्हें ले जाया गया तो वह LG साहब के सामने बोलने को तैयार नहीं थे। बता दें, राजभवन के बाहर पूर्व मार्शल अपनी नियुक्ति और नियमित करने की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे, जिन्हें दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

# "यति नरसिंहानंद को गिरफ्तार किया जाए और सख्त सज़ा दी जाए"

शम्स आगाज

**नई दिल्ली** :ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज गुलाम सरवर ने गृह मंत्री अमित शाह से मांग की कि गुस्ताखे नबी यति नरसिंहानंद समेत सभी को तुरंत गिरफ्तार किया जाए, हाफिज गुलाम सरवर ने गृह मंत्री को ज्ञापन देते हुए साफ कहा कि यह अपमानजनक है। पिछले कुछ वर्षों में देश में असामाजिक तत्वों द्वारा पैगंबर मोहम्मद सलल्लाहो वो सल्लम की शान में गुस्ताख़ी करना, अल्पसंख्यकों को धमकाना और उनका अपमान करना आम होता जा रहा है। इससे पूरे देश में सांप्रदायिक सौहार्द को खतरा है। अगर रामगिरि और अब यति नरसिंहानंद इसी तरह कानून से बाहर रहेंगे तो देश के लाखों अल्पसंख्यकों का सरकार और कानून से भरोसा उठ जायेगा. सरकार का सबका विश्वास वाला नारा बे माना हो कर रह जाएगा, इसलिए ऑल इंडिया

यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा गृह मंत्री अमित शाह से ऐसे सभी लोगों की गिरफ्तारी की मांग करती है।

# पैगम्बर मुहम्मद (स.अ.व.) का अपमान असहनीय

***मुसलमानों की भावना को आघात पहुंचाने के दोषी नरसिंहानंद जैसे गुस्ताखों को गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी सजा दी जाए: मुशावरत***

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली:** ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिसे मुशावरत ने तथाकथित स्वामी यति नरसिंहानंद की पैगंबर मुहम्मद (स. अ. व.) की शान में गुस्ताखी की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि इस बदजुबान व्यक्ति द्वारा कहे गए अपमानजनक शब्द असहनीय हैं। मुस्लिम संगठनों के संघ 'मुशावरत' के अध्यक्ष फिरोज अहमद, एडवोकेट ने कहा कि सरकार को ऐसे बदजुबान को अविलंब गिरफ्तार कर मुकदमा चलाना और सख्त से सजा देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उसे आज़ाद छोड़ देना ख़तरनाक है, ऐसे व्यकित के लिए समाज में कोई स्थान नहीं है, ऐसे बदज़ुबान व्यक्ति की जगह जेल है। उन्होंने कहा कि उसकी इस हरकत से देश में शांति व्यवस्था को ख़तरा दरपेश है।

मुशावरत के अध्यक्ष ने कहा कि मुसलमान एक ईश्वर में आस्था रखते हैं और मूर्तिपूजा इस्लाम में सबसे बड़ा पाप है, लेकिन इस्लाम अपने अनुयायियों को किसी भी धर्म की पवित्र हस्तियों को अपमानित करने से रोकता है और किसी की भावनाओं को चोट पहुंचाने की अनुमति नहीं देता। कुरआन उन देवी-देवताओं को भी बुरा भला कहने से मना करता है जिनको गैर मुस्लिम पूजते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि नरसिंहानंद की यह हरकत एक ऐसा कुकृत्य जिको सहन नहीं किया जा सकता था लेकिन हमें इस बदजुबान के विरुध कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए और सरकार से इस व्यक्ति को दंडित करने की मांग करनी चाहिए। मुसलमानों को चाहिए कि वह कहीं भी हों वहां पर अपने देशवासियों से पैग़म्बर मुहम्मद (स. अ. व.) के आदर्श जीवन (सीरत) का परिचय कराएं, और उनको ये भी बताएं कि मानव जाति की मुक्ति, स्वतंत्रता और समानता के दुश्मनों को मानवता के उद्धारक पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से क्या तकलीफ है और वे उनका चरित्र हनन (किरदारों) को इस लिए करते हैं ताकि पीड़ितों को एकजुट होने और उनकी न्याय और समानता की शिक्षाओं को अपनाने से रोक सकें।

# महापौर चुनाव को लेकर सदन में हंगामा पारित हुए प्रस्ताव; विपक्षी सदस्यों ने उठाए सवाल

एमसीडी सदन की बैठक एक बार फिर हंगामे की भेंट चढ़ गई। भाजपा ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित महापौर पद का चुनाव कराने की मांग की। हंगामे के बीच प्रस्ताव पास किए गए। भाजपा ने सवाल उठाए हैं कि सत्तारूढ़ होने के बाद भी आप पार्षदों की संख्या भाजपा के पार्षदों से कम थी। इसकी वजह से पारित प्रस्ताव अवैध हैं।

**नई दिल्ली।** दिल्ली नगर निगम की सदन की बैठक एक बार फिर हंगामे की भेंट चढ़ गई। भाजपा ने अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित महापौर पद का चुनाव कराने की मांग की। इससे सदन में हंगामा हो गया तो हंगामे के बीच प्रस्ताव पास किए गए। इस पर भाजपा ने सवाल उठाए हैं।

भाजपा ने कहा है कि सत्तारुढ़ होने के बाद भी आप पार्षदों की संख्या भाजपा के पार्षदों से कम थी। इसकी वजह से पारित प्रस्ताव अवैध हैं। इस पर भाजपा ने निगमायुक्त और महापौर को पत्र लिखकर प्रस्तावों को नए सिरे से चर्चा के लिए सदन में लाने की मांग की है।

**भाजपा पार्षद भी महापौर के आसन के सामने आए**

26 सितंबर को स्थायी समिति सदस्य पद के चुनाव पर विवाद होने और सुप्रीम कोर्ट से स्थायी समिति चेयरमैन के चुनाव पर रोक के बाद सदन में हंगामे के आसार पहले ही जताए जा रहे थे। हुआ भी यही। सदन की बैठक जैसे ही शुरू हुई तो दो शोक प्रस्तावों के बाद महापौर डॉ. शैली ओबेराय ने 26 सितंबर की बैठक का जिक्र करते हुए कहा कि स्थायी समिति सदस्य का जो गलत तरीके से चुनाव हुआ उस पर सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में रोक लगा दी है। यह बात कहता देख भाजपा के पार्षद भी महापौर के आसन के सामने आ गए।

**मुकेश गोयल ने प्रस्तावों को पारित कराना शुरू किया**

साथ ही बेंच पर चढ़कर महापौर को बोलने से रोकने लगे। वहीं, कई पार्षदों के हाथ में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित महापौर पद पर चुनाव कराने की तख्तियां थी। जिसमें अनुसूचित के महापौर का चुनाव कराओ के नारे भाजपा पार्षद लगा रहे थे। हंगामे के बीच नेता सदन मुकेश गोयल ने प्रस्तावों को पारित कराना शुरू कर दिया। बारी-बारी से प्रस्तावों पर निर्णय लिए गए। कुल 22 प्रस्तावों में 10 प्रस्तावों को पारित कर दिया जबकि दो निगमायुक्त को वापस भेज दिया और शेष दस प्रस्तावों को अगली बैठक तक के लिए स्थगित कर दिया। चूंकि स्थायी समिति के चेयरमैन का चुनाव कराने पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। इसलिए स्थायी समिति के गठन के मंजूरी देने वाला प्रस्ताव भी स्थगित कर दिया गया है।

**पास किए गए प्रस्ताव माने जाएंगे रद्द: राजा इकबाल सिंह**

सदन में पारित प्रस्तावों को विपक्षी भाजपा ने गलत करार दिया है। साथ ही इन प्रस्तावों को रद माना जाएगा। नेता प्रतिपक्ष राजा इकबाल सिंह कहा कि सदन की बैठक में आप के पास बहुमत नहीं था। क्योंकि सदन में आप के 81 तो भाजपा के 94 पार्षद मौजूद थे। जब सदन में प्रस्तावों को पास किया जा रहा था तो भाजपा पार्षद महापौर से वोटिंग कराने की मांग कर रहे थे।

**जो भी प्रस्ताव पारित हुए हैं वह नियमों के विरूद्ध**

राजा इकबाल सिंह ने आरोप लगाया कि महापौर डॉ. शैली ओबेराय ने भाजपा पार्षदों की मांग को जानबूझकर नजरअंदाज किया। जबकि एमसीडी के प्रक्रिया एवं संचालन नियम के अनुच्छेद 44 (1) के तहत जरुरी होता है कि अगर, न्यूनतम चार या उससे अधिक पार्षद किसी प्रस्ताव वोटिंग कराने की मांग कर दें तो महापौर को वोटिंग करानी होगी। पर महापौर ने ऐसा नहीं किया। इसलिए जो भी प्रस्ताव पारित हुए हैं वह नियमों के विरूद्ध हैं।

उन्होंने यह भी दावा किया कि आप पार्षद आप द्वारा स्थायी समिति के चुनाव में बाधा डालने से नाराज है इसलिए सदन में नहीं पहुंचे। उन्होंने महापौर के पास सदन में बहुमत न होने पर नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देना चाहिए।

**महिला महापौर के साथ की गई बदतमीजी: मुकेश गोयल**

एमसीडी में नेता सदन मुकेश गोयल ने भाजपा ने सदन में किसी भी प्रस्ताव पर वोटिंग की मांग नहीं की। सभी प्रस्तावों को सर्वसहमति से पास किया गया है। उन्होंने कहा कि अपनी बात उठाने का सभी का अधिकार है। महापौर के आसन के पास आकर भाजपा के पार्षदों ने विरोध किया और तो और महापौर से भी बदतमीजी की गई। उन्होंने कहा कि भाजपा पार्षद महापौर के हाथ से कागज छीन रहे थे और बोलने भी नहीं दे रहे थे। जो कि पूरी तरह से गलत हैं।

# छह सीटों पर जमकर हुआ मतदान, कई जगह कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

विधानसभा चुनाव यानी लोकतंत्र का यज्ञ जिसमें आहुति डालते हैं यजमान रूपी मतदाता। यहां यज्ञ के लिए कुंड के रूप में थी ईवीएम हवन सामग्री थी वोटर स्लिप मंत्रोच्चारण कर रहे थे मतदान केंद्र के अंदर बैठे पीठासीन अधिकारी व चुनाव कर्मी जिनके स्वाह बोलने यानी निर्देश पर यजमान को ईवीएम का बटन दबाना था। इधर ईवीएम का बटन दबा और उधर आहुति डली।

**फरीदाबाद।** विधानसभा चुनाव यानी लोकतंत्र का यज्ञ, जिसमें आहुति डालते हैं यजमान रूपी मतदाता। यहां यज्ञ के लिए कुंड के रूप में थी ईवीएम, हवन सामग्री थी वोटर स्लिप, मंत्रोच्चारण कर रहे थे मतदान केंद्र के अंदर बैठे पीठासीन अधिकारी व चुनाव कर्मी, जिनके स्वाह बोलने यानी निर्देश पर यजमान को ईवीएम का बटन दबाना था।

इधर ईवीएम का बटन दबा और उधर आहुति डली। अब जहां के यज्ञ में जितनी ज्यादा आहुतियां डली, वहां की अग्नि उतनी ही ज्यादा प्रज्ज्वलित हुई और वहां उतना ही तेज दिखा।

जिले की छह विधानसभा सीटों पर हुए यज्ञ यानी मतदान में पृथला क्षेत्र के यजमानों ने बढ़-चढ़ कर आहुति डाली और 70.6 प्रतिशत मतदान के साथ अव्वल रहे, जबकि बड़खल के यजमान पीछे रहे। यहां के यजमान रूपी मतदाता मात्र 48.3 प्रतिशत ही मतदान कर पाए। जिले में कुल मतदान 55.5 ही रहा।

अब दिलचस्प बात यह है कि पृथला क्षेत्र में वोटरों की संख्या सबसे कम 226202 है और यहां 159659 मतदाताओं ने मतदान किया और बड़खल क्षेत्र जहां दूसरे नंबर पर सबसे ज्यादा मतदाता 332125 हैं, वहां 160396 मतदाताओं ने मतदान किया। आंकड़ों से स्पष्ट है कि बड़खल क्षेत्र में पृथला से 105923 अधिक मतदाता हैं और मतदान उससे भी कम।

बहरहाल इन मतदाताओं ने अपने मत से अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र के प्रमुख प्रत्याशियों का भाग्य ईवीएम में बंद कर दिया है। प्रत्याशियों के राजनीतिक भविष्य कितना संवरेगा और किसकी किस्मत चमकेग, किसकी धूमिल होगी, यह आठ अक्टूबर को पता चलेगा जब मतगणना वाले दिन ईवीएम खुलेंगी। देर शाम तक चुनाव ड्यूटी में लगे चुनाव कर्मी ईवीएम को सील करने के बाद मतगणना केंद्रों पर जमा कराने में व्यस्त नजर आए। \

**आमने-सामने की दिखी कड़ी टक्कर, कहीं त्रिकोणीय मुकाबला**

बड़खल विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के विजय प्रताप सिंह और भाजपा के धनेश अदलखा, फरीदाबाद सीट पर भाजपा के विपुल गोयल और कांग्रेस के लखन सिंगला के बीच और तिगांव सीट पर भाजपा के राजेश नागर व निर्दलीय ललित नागर के बीच आमने-सामने का मुकाबला दिखा।

पृथला विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के रघुबीर तेवतिया, भाजपा के टेकचंद शर्मा और निर्दलीय प्रत्याशी व निवर्तमान विधायक नयनपाल रावत के बीच त्रिकोणीय मुकाबला नजर आया। यहां बसपा के सुरेंद्र वशिष्ठ व निर्दलीय दीपक डागर भी कई गांवों में प्रभावी दिखे।

इसी तरह का मुकाबला एनआईटी सीट पर भाजपा के सतीश फागना, कांग्रेस के नीरज शर्मा और इनेलो के नगेंद्र भड़ाना के बीच दिखा, यहां जजपा के करामत अली भी प्रमुख रूप से मैदान में थे, अब उनको कितने वोट मिले हैं, इसका काफी कुछ असर बाकी तीन प्रत्याशियों की जीत हार के समीकरण पर पड़ेगा।

ठीक इसी तरह से बल्लभगढ़ में मुख्य मुकाबला भाजपा के मूलचंद शर्मा व निर्दलीय प्रत्याशी शारदा राठौर जो दो बार की पूर्व विधायक हैं, उनके बीच होता नजर आया। यहां कांग्रेस की प्रत्याशी पराग शर्मा हैं, जबकि निर्दलीय राव रामकुमार और आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी रविंद्र फौजदार को मिले वोट प्रमुख योद्धाओं की जीत-हार में फर्क डालेंगे।

| विधानसभा क्षेत्र | मतदाताओं की संख्या | मतदान हुआ | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| पृथला | 226202 | 159659 | 70.6 |
| एनआईटी | 321159 | 192865 | 60.1 |
| बल्लभगढ़ | 332125 | 160396 | 48.1 |
| बड़खल | 274743 | 154348 | 53.3 |
| फरीदाबाद | 265869 | 142816 | 53.7 |
| तिगांव | 374454 | 200225 | 53.5 |
| कुल | 1794552 | 1002311 | 55.9 |

**दोपहर 1 बजे तक 32.5 फीसदी वोटिंग।**

सुबह 11 बजे तक 9.9 फीसदी वोटिंग।

फरीदाबाद जिले में सुबह 9 बजे तक 4.6 फीसदी वोटिंग हुई।

बल्लभगढ़ निर्दलीय प्रत्याशी राव-राम कुमार अपने परिवार सहित बोट डालने के बाद उंगली पर लगी साइन का निशान दिखाते हुए।

तिगांव से निवर्तमान विधायक राजेश नागर अपनी पत्नी मंजू नागर के साथ वोट डालने के बाद। निवर्तमान विधायक राजेश नागर ने अपने पैतृक गांव के प्राइमरी स्कूल में अपना वोट डाला।

फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी विपुल गोयल सपत्नीक वोट डालने के लिए पहुंचे।

तिगांव में मतदान केंद्रों के बाहर पुलिस प्रशासन ने प्रत्याशियों द्वारा लगाए गए शिविर के ऊपर टेंट उतरवा दिए हैं। सभी प्रत्याशियों ने सड़क के किनारे टेंट लगाए हुए थे

बड़खल विधानसभा क्षेत्र के विद्या निकेतन स्कूल के बाहर भाजपा के पंडाल पर अपनी पर्ची बनवाते मतदाता।

बल्लभगढ़ से भाजपा प्रत्याशी उद्योग वाणिज्य मंत्री मूलचंद शर्मा पूजा करते हुए

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सागरपुर के मतदान केंद्र 69 और 70 पर लगी मतदान करने वाले मतदाताओं कीक लाइन

प्रशासन के लाख दावों के बावजूद वोटर स्लिप लोगों के घर तक नहीं पहुंची। इसलिए मतदान केंद्रो पर लोग अपनी वोटर स्लिप तलाश रहे हैं। तिगांव में मतदान केंद्र में अपनी वोटर स्लिप तलासते हुए मतदाता

मतदाताओं में भारी उत्साह। बड़खल विधानसभा क्षेत्र के बूथ के बाहर कांग्रेस प्रत्याशी विजय प्रताप सिंह के टेंट पर अपनी पर्ची बनवाते मतदाता।

मतदान के प्रति ग्रामीण खूब दिख रहे हैं, उत्साह सुबह से ही लगी हुई है मतदान केंद्रों पर लाइन तिगांव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक मतदान केंद्र के बाहर लगी लाइन।

फरीदाबाद एनआईटी विधानसभा क्षेत्र के सारण मतदान केंद्र के बूथ नंबर 195 में अब तक 35 वोट डाले गए हैं केंद्र के बाहर लगी मतदाताओं की लाइन।

बल्लभगढ़ सेक्टर 2 सामुदायिक भवन में बने मतदान केंद्र के बाहर उद्योग मंत्री व भाजपा प्रत्याशी मूलचंद शर्मा परिवार सहित वोट डालने के बाद अंगुली पर लगी स्याही के निशान दिखाते हुए।

फरीदाबाद एनआईटी विधानसभा क्षेत्र के सारनमतदान केंद्र के बाहर वोट डालने के लिए पर्ची बनवेट हुए मतदाता

बड़खल विधानसभा क्षेत्र के विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल में बने मतदान केंद्र के बाहर मतदाता सूची में नाम टिक कराते हुए।

**जिले में कुल 1650 मतदान केंद्र**

शुक्रवार को डीएवी स्कूल सेक्टर-14, श्रीमती सुषमा स्वराज कालेज बल्लभगढ़, दौलत राम खान धर्मशाला, वासुदेव लखानी धर्मशाला, पंजाबी भवन और गुर्जर भवन में अंतिम रिहर्सल के बाद टीमों को मतदान कराने के लिए ईवीएम और चुनाव सामग्री दी गई। जिले में कुल 1650 मतदान केंद्र बनाए गए हैं।

# गुरुग्राम की चारों विधानसभा सीटों पर मतदान संपन्न, पिछली बार ज्यादा था मतदाताओं में उत्साह

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम जिले में सभी विधानसभा सीटों पर 8 लाख 71 हजार 399 मतदाताओं ने मतदान किया। हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 में गुड़गांव जिले की चारों सीटों पर 57 .9 प्रतिशत मतदान हुआ। सोहना विधानसभा में सबसे ज्यादा 70 .8 प्रतिशत वोट पड़े। मतगणना 8 अक्टूबर को सेक्टर 14 स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय में होगी। मतदान की अधिकृत जानकारी पोलिंग पार्टियों द्वारा दी जाने वाली फाइनल रिपोर्ट के बाद ही जारी होगी।

**गुरुग्राम।** विधानसभा चुनाव में जिले की चारों विधानसभा सीटों गुड़गांव, बादशाहपुर, सोहना और पटौदी में शनिवार को 57.9 प्रतिशत मतदान हुआ। जिले में कुल 15 लाख चार हजार 959 मतदाता हैं, जिसमें से 8 लाख 71 हजार 399 मतदाताओं ने मतदान किया। जिला प्रशासन के अनुसार मतदान की अधिकृत जानकारी पोलिंग पार्टियों द्वारा दी जाने वाली फाइनल रिपोर्ट के बाद ही जारी होगी।

**बादशाहपुर में मतदान**

सोहना विधानसभा में सबसे ज्यादा 70.8 प्रतिशत वोट पड़े। गुरुग्राम के जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने बताया कि बादशाहपुर विधानसभा क्षेत्र में दो लाख 82 हजार 732 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया, जोकि कुल संख्या पांच लाख 20 हजार 958 का 54.3 फीसद है।

**पटौदी और गुड़गांव में मतदान**

इसी तरह पटौदी विधानसभा क्षेत्र में एक लाख 57 हजार 564 मतदाताओं ने वोट डाले, जोकि कुल संख्या दो लाख 54 हजार 780 का 61.8 फीसद है। वहीं, गुड़गांव विधानसभा क्षेत्र में दो लाख 28 हजार 424 मतदाताओं ने मतदान किया, जोकि कुल संख्या चार लाख 43 हजार 102 का 51.6 फीसद है।

**सोहना में मतदान**

सोहना विधानसभा क्षेत्र में एक लाख 96 हजार 341 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया जोकि कुल संख्या 2,86,119 का 68.6 फीसद है। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में गुरुग्राम में 62. 3 प्रतिशत मतदान हुआ था, वहीं इसी साल हुए लोकसभा चुनाव में 60.7 प्रतिशत वोट पड़े थे।

**तीन बजे तक 40 प्रतिशत मतदान हुआ**

साइबर सिटी ( गुड़गांव ) में विधानसभा चुनाव में तीन बजे तक 40 प्रतिशत मतदान हुआ। सुबह सात बजे बूथों पर मतदाता पहुंचने शुरू हुए और साढे आठ बजे तक 2.9 प्रतिशत वोट पड़े। हाईराइज सोसायटियों में इस बार 126 पोलिंग बूथ बनाए गए थे ताकि मतदाताओं को वोट डालने के लिए दूर न जाना पड़े। सोसायटियों में सुबह आठ बजे तक कुछ ही मतदाता नजर आए और दिनभर ज्यादा भीड़ नजर नहीं आई।

वहीं, दूसरी तरफ पुराने शहर के कई बूथों पर दिन में 12:30 बजे तक मतदाताओं की लंबी कतार रही। सुबह 11 बजे तक 16.6 प्रतिशत और पौने एक बजे तक 26.9 प्रतिशत मतदान हुआ। ढाई बजे 36.9 और तीन बजे तक 40.3 प्रतिशत मतदान हुआ।

**7 बजे तक मतदान प्रतिशत**

बादशाहपुर- 54.3 %
गुड़गांव- 51.6 %
पटौदी- 61.8 %
सोहना- 70.8 %
कुल- 57.9 %

**गुरुग्राम में वर्ष 2019 विधानसभा चुनाव में यह रहा था मतदान प्रतिशत**

बादशाहपुर- 59.4 %
गुड़गांव- 54.3 %
पटौदी- 62.7 %
सोहना- 72.7 %
कुल- 62.3 %

**आठ अक्टूबर को राजकीय महिला महाविद्यालय में होगी मतगणना**

आठ अक्टूबर को सेक्टर 14 स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय में मतगणना होगी। वोटिंग के बाद जिले के सभी चार विधानसभा क्षेत्रों की पोलिंग पार्टियां महिला महाविद्यालय में पहुंची। डीसी निशांत कुमार यादव ने देर शाम कालेज परिसर का निरीक्षण भी किया। इसी परिसर में चारों विधानसभा की ईवीएम आठ अक्टूबर को मतगणना की तारीख तक स्ट्रांग रूम में रखी जाएंगी।

# देश के मुसलमान अब बहकावे में नहीं आते

योगेंद्र योगी

इसी तरह सोशल मीडिया पर बेवजह की बहस की जाती रही है। इसके बावजूद देश के मुसलमानों ने ठंडा रुख रखा, कोई ऐसी प्रतिक्रिया नहीं दी जिससे कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती उत्पन्न हो'

देश के मुसलमानों को गुमराह करने और भड़काने की कोशिशें अब नाकाम होने लगी हैं। मुसलमानों को शायद समझ आ गया है कि किस तरह राजनीतिक षड्यंत्रों से दूर रह कर अपने विकास पर ध्यान देना है। यही वजह है कि देश के मुसलमानों ने राजनीतिक दलों के नेताओं, मुल्ला-मौलवियों और हिंदुत्व के कट्टर समर्थकों के उकसावे वाले बयानों को गंभीरता से नहीं लिया। मुसलमानों को यह भी समझ में आ गया है कि चंद सिरफिरों की देशविरोधी हरकतों का समर्थन करने से उनकी कौम का नुकसान होगा। यही वजह है कि हाल ही में हिजबुल्ला के कट्टर आतंकवादी और सर्वोच्च रणनीतिकार हसन नसरुल्लाह के खात्मे के बाद देश से व्यापक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई। इसी तरह हमास और इजराइल युद्ध के दौरान मारे फिलीस्तिनियों को लेकर भी कमोबेश यही रुख कायम रहा। कश्मीर के कुछ इलाकों में सिरफिरों ने हिजबुल्लाह आतंकवादी हसन नसरुल्ला के मरने पर जरूर विरोध प्रदर्शन किया, किंतु देश के बाकी हिस्सों में शांति बनी रही। इसराइल-फिलिस्तीन युद्ध में केंद्र सरकार ने हमास की कड़ी निंदा की। मोदी सरकार इसराइल के साथ खड़ी नजर आई। इसराइल के खिलाफ भारत में बयानबाजी जरूर हुई, किन्तु ब्रिटेन और अमरीका की तरह कोई विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ। गौरतलब है कि इन दोनों देशों में इसराइल के खिलाफ जबरदस्त रैलियां निकाली गई, धरने-प्रदर्शन किए गए। अमरीका में काफी बवाल हुआ। अमरीकी विश्वविद्यालय राजनीति का अखाड़ा बन गए।

विश्वविद्यालयों पर पुलिस कार्रवाई की नौबत आ गई। मानवाधिकार और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का पाठ दुनिया को पढ़ाने वाले अमरीका की खूब किरकिरी हुई। कमोबेश यही हाल ब्रिटेन का हुआ। फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारियों से निपटने में ब्रिटिश सरकार के हाथ-पैर फूल गए। यूरोप के कुछ देशों में भी इसी तरह के प्रदर्शन हुए। इजराइल ने हमास के सर्वोच्च राजनीतिक नेता इस्माइल हानिया को ईरान के दौरे के दौरान विस्फोट से उड़ा दिया। इस पर कई देशों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई, किन्तु भारत में कहीं भी कोई विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ। आश्चर्य की बात यह है कि भारत और विश्व के मुस्लिम जगत से जुड़े मुद्दों को लेकर देश के मुसलमानों ने चुनिंदा स्थानों पर प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया जताई, किन्तु कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने जमकर उछलकूद मचाई। मुसलमानों ने ऐसे मुद्दों को ज्यादा महत्व नहीं दिया। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 और 35-ए हटाए जाने के बाद कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने मुसलमानों का सच्चा हितैषी साबित करने के लिए जमकर विरोध किया। जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने नेशनल कान्फ्रेंस से चुनावी गठबंधन किया। शेख अब्दुल्ला की पार्टी नेशनल कान्फ्रेंस ने चुनावी घोषणा में धारा-370 को वापस लाने का ख्याली पुलाव पकाया है। कांग्रेस हिंदू वोटों की नाराजगी के डर से इस पर चुप्पी साधे हुए है। देश के मुसलमानों को यह समझ आ गया है कि जम्मू-कश्मीर का मुद्दा उनके हितों पर कोई असर डालने वाला नहीं है। यह मुद्दा देश के आम मुसलमानों का नहीं है। यह पाक परस्त आतंकवाद से जुड़ा हुआ मामला है। केंद्र सरकार ने तीन तलाक को खत्म कर दिया। मुस्लिम महिलाओं से जुड़े तीन तलाक के मुद्दे पर भी देश में सिर्फ लखनऊ और पुणे में विरोध प्रदर्शन हुआ। यह प्रदर्शन भी ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आह्वान पर हुआ। देश में अन्य हिस्सों में मुसलमानों ने इस पर कोई व्यापक प्रतिक्रिया नहीं जताकर पर्सनल लॉ बोर्ड के इरादों को विफल कर दिया। नागरिकता ( संशोधन ) अधिनियम 2019 ( सीएए ) 11 दिसंबर 2019 को भारत की संसद द्वारा पारित किया गया था। इसने अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान से आए प्रताड़ित धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए भारतीय नागरिकता प्रदान करके नागरिकता अधिनियम 1955 में संशोधन किया। भारत में 2014 तक पात्र अल्पसंख्यकों को हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी या ईसाई बताया गया। सीएए के तहत देश के स्थायी निवासी मुस्लिम समुदाय को छोड़कर तीन मुस्लिम बहुल पड़ोसी मुल्कों से आने वाले बाकी धर्मों के लोगों को नागरिकता देने का प्रावधान है। सीएए के विरोध में मुद्दे पर कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने खूब हंगामा किया।

इस कानून के तहत यह साफ जाहिर था कि देश में लंबे अर्से से रहने वाले मुसलमानों को इसके दायरे में शामिल नहीं किया गया है। इसके बावजूद विपक्षी दलों ने इस पर जबरदस्त विवाद पैदा करके मुसलमानों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया। इस मुद्दे पर कई दिनों तक वाद-विवाद हुआ। आखिरकार देश के मुसलमानों को समझ में आ गया कि सीएए से उनका कोई सरोकार नहीं है। यह कानून सिर्फ बाहर से आए अवैध मुसलमानों पर लागू होगा। यही वजह रही कि इस मुद्दे पर विपक्षी दलों का देश के मुसलमानों ने साथ नहीं दिया। विपक्षी दल ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी ने भी मुसलमानों को उकसाने में कसर बाकी नहीं रखी। गैरजरूरी मुद्दों को हवा देकर भाजपा ने राजनीतिक धुरवीकरण का प्रयास किया। कुछ महीने पहले भाजपा शासित उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकार ने कांवड़ यात्रा मार्ग पर स्थित भोजनालयों को मालिकों और कर्मचारियों के नाम प्रदर्शित करने का निर्देश दिया था। उच्चतम न्यायालय ने इस विवादास्पद आदेश पर रोक लगा दी। न्यायालय ने कहा कि प्रावधानों के समर्थन के बिना, यदि निर्देश को लागू करने की अनुमति दी जाती है, तो यह भारत गणराज्य के धर्मनिरपेक्ष चरित्र का उल्लंघन होगा। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने अपराधियों और कानून-व्यवस्था भंग करने वाले आरोपियों के घरों पर बुलडोजर चलवाने के निर्देश दिए थे। इस निर्देश की चपेट में ज्यादातर मुसलमान ही आए थे। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर रोक लगा दी। कोर्ट का कहना है कि सार्वजनिक अतिक्रमण पर ही एक्शन होगा। कोर्ट ने बुलडोजर कार्रवाई पर राज्यों को निर्देश देते हुए कहा है कि बुलडोजर न्याय का महिमामंडन बंद होना चाहिए।

कानूनी प्रक्रिया के तहत ही अतिक्रमण हटाएं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मौके-बेमौके राजनीतिक दलों के निहित स्वार्थों पर सुप्रीम कोर्ट ने पानी फेरा है। अदालतों के ऐसे आदेशों से देश के मुसलमानों का भरोसा मजबूत हुआ है। यही वजह है कि मुसलमानों ने ऐसे सार्वजनिक मुद्दों पर भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों के उकसावे के प्रयासों का खामोशी से जवाब दिया। सोशल मीडिया पर लव जेहाद जैसे आरोप या फिर किसी सामान्य घटना को सांप्रदायिक रंग देने के प्रयासों को भी मुसलमानों ने शांति और सौहार्द रख कर विफल कर दिया। इससे साफ जाहिर है कि देश के मुसलमान अब परिपक्व हो चुके हैं और फालतू के भावनात्मक और धार्मिक बहकावे में नहीं आते हैं। दरअसल मुसलमानों को सुरक्षा का एहसास दिलाने में सुप्रीम कोर्ट की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मुसलमानों ने न्यायिक फैसलों का सम्मान किया है। असम के सीएम हेमंत विश्व सरमा मुसलमानों के खिलाफ मौके-बेमौके बयानबाजी करते रहे हैं। इसी तरह सोशल मीडिया पर बेवजह की बहस की जाती रही है। इसके बावजूद देश के मुसलमानों ने ठंडा रुख रखा, कोई ऐसी प्रतिक्रिया नहीं दी जिससे कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती उत्पन्न हो। वैसे तो देश में मुस्लिमों का कोई एक नेता नहीं है। यदि सीमित स्तर पर माना जाए तो सांसद असादुदीन ओवैसी को माना जा सकता है। ओवैसी की बातों पर भी मुसलमानों ने कभी तीखी प्रतिक्रिया नहीं दी। बीजेपी ने मथुरा में ईदगाह और काशी में विश्वनाथ मंदिर को लेकर कई बार बयानबाजी की। मुसलमानों को समझ आ गया कि ये सब राजनीतिक स्वार्थ हैं। इसी तरह विपक्षी दलों के बात का बतंगड़ बनाने के प्रयासों को नाकाम कर मुसलमानों ने साबित किया है कि राजनीतिक प्रपंचों से दूर रह कर ही विकास की इबारत लिखी जा सकती है। यह बदलाव सकारात्मक दिशा में है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV Drive the Future

# सीजी पावर ने रेनेसास के आरएफ कंपोनेंट व्यवसाय के अधिग्रहण के साथ सेमीकंडक्टर डिजाइन में किया प्रवेश

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग क्षेत्र की कंपनी और मुरुगप्पा समूह का हिस्सा सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड ने सेमीकंडक्टर समाधानों के आपूर्तिकर्ता रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन से रेडियो फ्रीक्वेंसी (आरएफ) घटक व्यवसाय के अधिग्रहण की घोषणा की है।

4 अक्टूबर 2024 को सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड और रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स अमेरिका इंक., रेनेसास की एक सहायक कंपनी तथा आरएफ घटकों के कारोबार में संपत्ति रखने वाली अन्य संबद्ध संस्थाओं के बीच एक परिसंपत्ति खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह अधिग्रहण प्रथागत शर्तों और विनियामक अनुमोदनों के बाद पूरा किया जाएगा, तथा कारोबार को सीजी द्वारा स्थापित की जाने वाली संस्थाओं को हस्तांतरित किया जाएगा।

अधिग्रहण में बौद्धिक संपदा (आईपी), मूर्त परिसंपत्तियां, तथा सेमीकंडक्टर डिजाइन, विपणन और आरएफ घटक व्यवसाय से संबंधित अनुप्रयोगों के चुनिंदा कर्मचारी शामिल हैं।

सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड के अध्यक्ष वेल्लयन सुब्बैया ने कहा, ₹इस अधिग्रहण का उद्देश्य सेमीकंडक्टर डिजाइन और विकास क्षेत्र में भारत की भूमिका को मजबूत करना है, जो एक महत्वपूर्ण क्षमता वाला बढ़ता उद्योग है।₹

रेनेसास में एनालॉग और कनेक्टिविटी समूह के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और महाप्रबंधक डेविन ली ने कहा, ₹यह समझौता हमारी आरएफ टीम का विस्तार करने की अनुमति देता है, और सीजी एक सहज परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए समर्थन प्रदान करेगा। यह कदम रेनेसास को एनालॉग और कनेक्टिविटी व्यवसाय के भीतर अपने रणनीतिक खंड पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम करेगा ताकि ग्राहकों की मांगों को बेहतर ढंग से पूरा किया जा सके।"

# जेएसडब्ल्यू ग्रुप की 50 गीगावाट घंटा बैटरी विनिर्माण क्षमता 2028-2030 तक जाएगी बढ़

परिवहन विशेष न्यूज

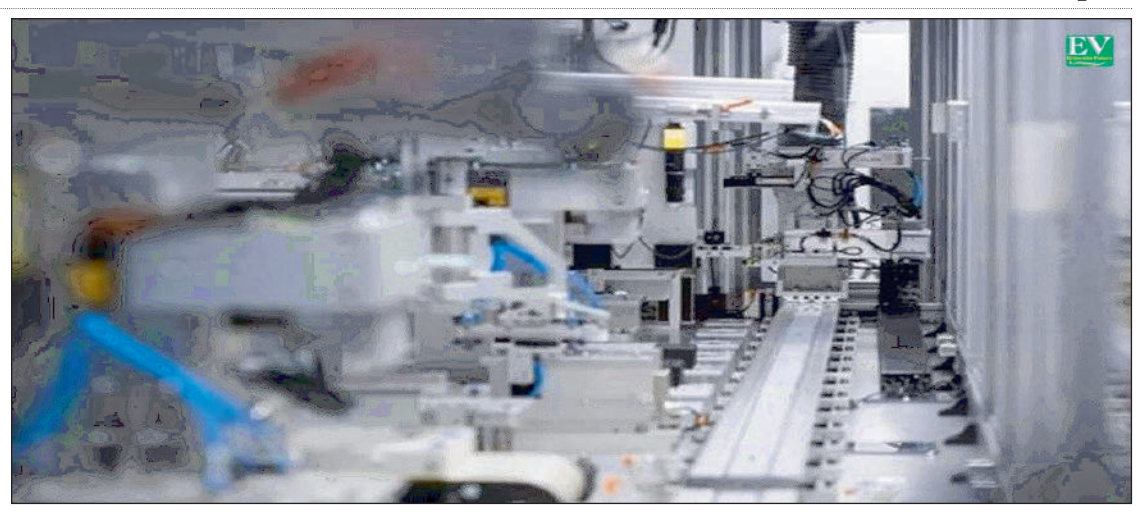

जेएसडब्ल्यू ग्रुप जिसने हाल ही में एमजी मोटर इंडिया में 35% हिस्सेदारी खरीदी है, 2028 और 2030 के बीच अपनी प्रस्तावित सुविधा में सेल और बैटरी विनिर्माण क्षमता को 50 गीगावाट घंटा तक विस्तारित करने का लक्ष्य बना रहा है ।

कंपनी अपने सेल और बैटरी विनिर्माण कार्यक्रम की योजना कई चरणों में बना रही है। पहले चरण में इसका लक्ष्य 2026 तक 10 GWh की सेल और बैटरी विनिर्माण क्षमता हासिल करना है, और फिर दूसरे चरण में इसे 50 GWh तक बढ़ाना है।

फरवरी में जेएसडब्ल्यू समूह ने 40,000 करोड़ रुपये के निवेश से कटक और पारादीप में इलेक्ट्रिक वाहन और बैटरी विनिर्माण परियोजना स्थापित करने के लिए ओडिशा सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए ।

बैटरी सेल विनिर्माण मुख्य रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों और अन्य बैटरी ऊर्जा भंडारण कार्यक्रमों के लिए समूह की कैप्टिव खपत को पूरा करेगा। जेएसडब्ल्यू समूह की एक इलेक्ट्रिक वाहन सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू ग्रीन मोबिलिटी और एक बैटरी भंडारण प्रणाली सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू बीएसएस है।

सूत्रों ने बताया कि जेएसडब्ल्यू समूह सेल और बैटरी विनिर्माण में प्रौद्योगिकी गठजोड़ के लिए प्रमुख बैटरी निर्माताओं के साथ बातचीत कर रहा है ।

भारत अभी लिथियम-आयन बैटरियों के निर्माण के शुरुआती चरण में है, जो इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण अनुप्रयोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। लिथियम-आयन बैटरियों के लिए देश चीन, जापान और दक्षिण कोरिया से आयात पर निर्भर है। इस दशक के अंत तक भारत की बैटरी विनिर्माण क्षमता 110-1500 गीगावॉट घंटे तक पहुँचने का अनुमान है। सरकार ने भारत में उन्नत रसायन सेल (एसीसी) विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित करने के लिए 18,100 करोड़ रुपये की उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शुरू की है, जिसका लक्ष्य 50 गीगावॉट घंटे विनिर्माण क्षमता हासिल करना है।

घरेलू बैटरी निर्माण से इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने में मदद मिलने और आपूर्ति श्रृंखला को स्थानीय बनाने की उम्मीद है। बैटरी की लागत आम तौर पर इलेक्ट्रिक वाहन की कीमत का लगभग 40% होती है। मुख्य रूप से बैटरी की उच्च लागत के कारण अधिग्रहण की उच्च लागत को देश में इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने में एक बड़ी बाधा के रूप में देखा जाता है।

जेएसडब्ल्यू समूह की अक्षय ऊर्जा सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू नियो एनर्जी उन सात कंपनियों में शामिल थी, जिन्होंने उन्नत रसायन सेल के लिए सरकार के उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन के तहत 10 गीगावाट घंटे की क्षमता के लिए बोली लगाई थी। हालांकि, यह क्षमता रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को दी गई ।

जेएसडब्ल्यू समूह के अलावा कई कंपनियां जैसे ओला इलेक्ट्रिक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, अमारा राजा, एक्साइड इंडस्ट्रीज, गोडी इंडिया, राजेश एक्सपोर्ट्स भी भारत में बैटरी सेल बनाने के लिए अपनी गीगा फैक्ट्रियां स्थापित कर रही हैं।

रिलायंस इंडस्ट्रीज की बैटरी गीगाफैक्ट्री के 2025 की दूसरी छमाही में परिचालन शुरू करने की उम्मीद है। संयंत्र जिसकी वार्षिक क्षमता 30 GWh होगी, शुरू में बैटरी सिस्टम और पैक्स को असेंबल करेगा बाद में सेल निर्माण और रासायनिक उत्पादन तक विस्तार करेगा।

हाल ही में अमारा राजा ने गोशन हाई-टेक के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी की घोषणा की, जिसके तहत बेलनाकार और प्रिज्मीय दोनों प्रकार के सेल बनाने के लिए गोशन की प्रौद्योगिकी का लाइसेंस दिया जाएगा।

# छोटी यात्राओं और शहरी आवागमन के लिए ठुकराल ई-जेन ली सर्वश्रेष्ठ इलेक्ट्रिक स्कूटर

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक स्कूटर इस दुनिया का भविष्य हैं क्योंकि वे शून्य उत्सर्जन करते हैं, जो उन्हें पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्प बनाता है। वे गैस से चलने वाले वाहनों की तुलना में शांत भी होते हैं, शहरी वातावरण में ध्वनि प्रदूषण को कम करते हैं और अधिक सुखद सवारी अनुभव प्रदान करते हैं। कम रखरखाव के अनुभव की पेशकश करने के अलावा, वे ट्रैफ़िक की भीड़ को भी कम करते हैं और नियमित स्कूटरों के विपरीत तेज़ गति से नहीं चलते हैं, जिससे यह एक सुरक्षित विकल्प बन जाता है। ये सभी विशेषताएँ इसे बच्चों और बुजुर्गों वाले घरों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती हैं जिन्हें छोटी यात्राओं के लिए सवारी की ज़रूरत होती है।

ठुकराल इलेक्ट्रिक बाइक्स द्वारा प्रस्तुत ई-जेन ली इलेक्ट्रिक स्कूटर सबसे खास उत्पादों में से एक है। यह इलेक्ट्रिक स्कूटर आपको एक बार चार्ज करने पर 100 किलोमीटर की असाधारण रेंज प्रदान करता है, जो इसे लंबी यात्राओं के लिए एक बेहतरीन विकल्प बनाता है। यह एक शानदार TFT टच डिस्प्ले के साथ आता है जिसमें एक बेहतर राइडिंग अनुभव के लिए डार्क और ऑटो मोड हैं।

**विशेष सुविधाएँ:**

रेंज: एक बार चार्ज करने पर 100 किलोमीटर

अधिकतम गति: 50 से 55 किलोमीटर प्रति घंटा

चार्जिंग समय: 5 घंटे

डिस्प्ले: TFT टच डिस्प्ले के साथ (डार्क और ऑटो मोड)

ब्रेक सिस्टम: फ्रंट डिस्क ब्रेक और रियर ड्रम ब्रेक

मोटर प्रकार: 1200 वाट बीएलडीसी मोटर

राइड मोड: इको, राइड और स्पोर्ट मोड

# अधिकतम 25 किमी रफ्तार वाले ई स्कूटर ही चला सकेंगे नाबालिग, लर्निंग लाइसेंस पर भी रोक

परिवहन विशेष न्यूज

जुवेनाइल ड्राइविंग यानी अवयस्क बच्चों के वाहन के मुद्दे पर केंद्र सरकार ऐसे वाहनों की अधिकतम गति सीमा 25 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित करने जा रही है। वहीं इन वाहनों के इंजन 50 सीसी और मोटर पावर अधिकतम 1500 वाट से ज्यादा नहीं होंगे। सरकार की तरफ से यह फैसला नाबालिकों से हो रहे दुर्घटनाओं को देखते हुए लिया गया है।

**नई दिल्ली।** जुवेनाइल ड्राइविंग यानी अवयस्क बच्चों के वाहन के मुद्दे पर ध्यान देते हुए केंद्र सरकार ने ऐसे वाहनों की अधिकतम गति सीमा 25 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित करने का फैसला किया है। मोटर वाहन कानून में बड़े पैमाने पर परिवर्तन कर रहे सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने इन वाहनों की इंजन क्षमता 50 सीसी और मोटर पावर अधिकतम 1500 वाट निर्धारित करने का भी फैसला किया है।

**शीतकालीन सत्र में पेश होंगे विधेयक**

मंत्रालय ने मौजूदा कानून में 67 संशोधन प्रस्तावित किए हैं, जिन पर लोग 15 अक्टूबर तक अपने सुझाव दे सकते हैं। इन संशोधनों से संबंधित विधेयक संसद के शीतकालीन सत्र में पेश किए जाने की संभावना है। संशोधन के प्रस्ताव में कहा गया है कि 16 वर्ष पूरी कर चुके किशोर-किशोरी विशुद्ध इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन सार्वजनिक स्थानों पर चला सकते हैं, बशर्ते उनमें डिजाइन स्पीड लिमिट और इंजन-पावर क्षमता की सीमा का ध्यान रखा गया हो। 18 वर्ष से कम आयु का कोई व्यक्ति इनके अतिरिक्त कोई अन्य वाहन नहीं चला सकता।

**18 वर्ष से कम आयु वालों को नहीं मिलेगा लर्नर लाइसेंस**

मंत्रालय इसके पहले राज्यों से इन वाहनों पर विशेष ध्यान देने की अपेक्षा भी कर चुका है, क्योंकि उसे लगातार यह शिकायतें मिल रही हैं कि तमाम ऐसे वाहन बिक रहे हैं जिनकी इंजन क्षमता भी मानक से अधिक है और डिजाइन स्पीड भी। जुवेनाइल ड्राइविंग पर ही और अधिक ध्यान देते हुए मंत्रालय ने यह नियम भी प्रस्तावित किया है कि सामान्य परिस्थितियों में 18 वर्ष से कम आयु के किसी भी व्यक्ति को आटोमैटिक गियर वाले वाहन का लर्नर लाइसेंस जारी नहीं किया जाएगा। केवल उसके अभिभावक की लिखित सहमति के बाद ही उसे लर्नर लाइसेंस जारी किया जा सकता है।

**रफ्तार पर सख्ती**

हल्के मोटर वाहनों की एक नई श्रेणी बनाने के साथ ही मध्यम भार और यात्री वाहनों तथा भारी भार और यात्री वाहनों के ड्राइवरों पर गति सीमा के उल्लंघन पर न्यूनतम दो हजार और अधिकतम चार हजार रुपये जुर्माना किया जाएगा। अगर-अगर यह गलती दोहराई जाती है तो ऐसे ड्राइवरों का लाइसेंस जब्त भी किया जा सकता है।

# भारी उद्योग मंत्रालय ने स्थिर ऊर्जा भंडारण समाधान के लिए 10 गीगावाट आरएफपी की घोषणा

परिवहन विशेष न्यूज

इंडिया एनर्जी स्टोरेज अलायंस ने नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 04 अक्टूबर को लिथियम-आयन बैटरी पर एक अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें भारत के बढ़ते लिथियम-आयन बैटरी क्षेत्र में चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की गई। इसमें 300 से अधिक उद्योग जगत के नेताओं ने भाग लिया और शोध एवं विकास, नवाचार, विनिर्माण, आपूर्ति श्रृंखला, कच्चे माल, स्थिर ऊर्जा भंडारण, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, रीसाइक्लिंग और सेकंड-लाइफ अनुप्रयोगों जैसे विषयों पर चर्चा की।

इस आयोजन में भारत सरकार की एडवांस्ड केमिस्ट्री सेल प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव (एसीसी-पीएलआई) योजना द्वारा समर्थित बैटरी विनिर्माण क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद की गई थी।

शिखर सम्मेलन के दौरान भारी उद्योग मंत्रालय के संयुक्त सचिव विजय मित्तल ने नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) और नीति आयोग के सहयोग से ग्रिड-स्केल ऊर्जा भंडारण प्रणालियों के लिए 10 गीगावाट के प्रस्ताव के लिए अनुरोध (आरएफपी) की योजना की घोषणा की। उन्होंने मंत्रालय के इलेक्ट्रिक वाहन पहल के हिस्से के रूप में रसायन सेल के स्वदेशी निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने का उल्लेख किया, जिसका लक्ष्य 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन और आंतरिक दहन इंजन (आईसीई) वाहनों के आयात पर निर्भरता कम करना है। यह पहल तीन साल पहले शुरू हुई थी, जिसमें उन्नत रसायन सेल के घरेलू उत्पादन के लिए विभिन्न मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) को 40 गीगावाट-घंटे से अधिक आवंटित किए गए थे।

कई भारतीय राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ और स्टार्टअप उन्नत लिथियम तकनीक विकसित कर रहे हैं, जिनमें लिथियम-सल्फर और सॉलिड-स्टेट बैटरी शामिल हैं। इंडिया एनर्जी स्टोरेज का अनुमान है कि भारतीय उद्योग को अगले पाँच वर्षों में अपने निवेश को पाँच गुना बढ़ाने की ज़रूरत है।

इंडिया एनर्जी स्टोरेज के कार्यकारी निदेशक देवी प्रसाद दास ने भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने में लिथियम-आयन बैटरी उद्योग के महत्व पर प्रकाश डाला। शिखर सम्मेलन का उद्देश्य देश के संधारणीय ऊर्जा में परिवर्तन के लिए रोडमैप को आकार देना था, जिससे भारतीय और वैश्विक खिलाड़ियों के बीच सहयोग और नवाचार के लिए एक मंच उपलब्ध हो सके। भारत में लिथियम बैटरी की अनुमानित मांग 2032 तक 600-900 गीगावाट-घंटे तक पहुँचने की उम्मीद है, जिससे अनुप्रयोग, तापमान और पर्यावरणीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उचित सुरक्षा मानकों की आवश्यकता है।

इंडिया एनर्जी स्टोरेज अलायंस के अध्यक्ष डॉ. राहुल वालवाल्कर ने बताया कि 2020 में चीन के बाहर अनुमानित विनिर्माण क्षमता लगभग 100 गीगावाट-घंटे थी। अगले 5 से 10 वर्षों में यह आंकड़ा 1,000 से 1,500 गीगावाट-घंटे के बीच बढ़ने की उम्मीद है।

# दिल्ली में इलेक्ट्रिक वाहनों पर टैक्स माफी के बाद अब मांगा जा रहा 2 साल का बकाया

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में दो साल पहले इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए शुरू की गई टैक्स फ्री पॉलिसी के तहत वाहन खरीदने वाले लोग अब मुश्किल में हैं। इन वाहनों की फिटनेस जांच कराने जाने वाले बसों के मालिकों से अब 2022 से रोड टैक्स मांगा जा रहा है। साथ ही उनसे दो साल की पेनाल्टी भी वसूली जा रही है।

इलेक्ट्रिक कारों के लिए परिवहन विभाग का ऑनलाइन सिस्टम अपडेट नहीं हो पाया है। इस वजह से इनकी फिटनेस की रसीदें जारी नहीं हो पा रही हैं। विभागों की इस नई समस्या में फंसे करीब 500 वाहन एक महीने में सड़कों से हटा दिए गए हैं। फिटनेस न होने की वजह से ये वाहन सड़कों पर नहीं दौड़ पा रहे हैं।

टैक्सी मालिकों की इस समस्या को लेकर ऑल दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट ने पिछले गुरुवार, 03 अक्टूबर को परिवहन विभाग के विशेष आयुक्त शहजाद आलम से मुलाकात की और समस्या के समाधान की मांग की।

संजय सम्राट ने बताया कि 2022 में दिल्ली सरकार ने ई-वाहनों को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी के साथ रजिस्ट्रेशन और रोड टैक्स भी माफ किया था। इस योजना को देखकर बड़ी संख्या में लोगों ने बस, कार व अन्य व्यवसायिक वाहन खरीदे। इनकी फिटनेस अवधि दो साल थी। अब दो साल पूरा होने के बाद जब वाहन मालिक इन्हें फिटनेस सेंटर लेकर गए तो बसों की फिटनेस से पहले उनसे वर्ष 2022 से अब तक का रोड टैक्स जमा कराने को कहा गया। साथ ही 100 फीसदी जुर्माना भी लगा दिया गया है यानी ई-बस का एक साल का रोड टैक्स नौ हजार रुपये है तो उनसे जुर्माना के साथ 18 हजार रुपये जमा कराने को कहा जा रहा है। बस मालिक विवेक कुमार का कहना है कि उनके पास 22 इलेक्ट्रिक बसें हैं। इनमें से कुछ बसों का फिटनेस सर्टिफिकेट समाप्त हो चुका है। इनके लिए उन्हें वर्ष 2022 से अब तक का रोड टैक्स देना है।

यूनियन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है कि बसों की फिटनेस तो पुराना रोड टैक्स और जुर्माना देकर की जा रही है, लेकिन कारों की फिटनेस ही नहीं की जा रही है। परिवहन विभाग के ऑनलाइन सॉफ्टवेयर में गाड़ी की फिटनेस की राशि नहीं दिखाई जा रही है। इस वजह से अधिकारियों को भी नहीं पता कि इन गाड़ियों की फिटनेस के लिए उनसे कितनी राशि ली जानी है। फिटनेस के अभाव में 450 से ज्यादा गाड़ियां सड़कों से हटा दी गई हैं।

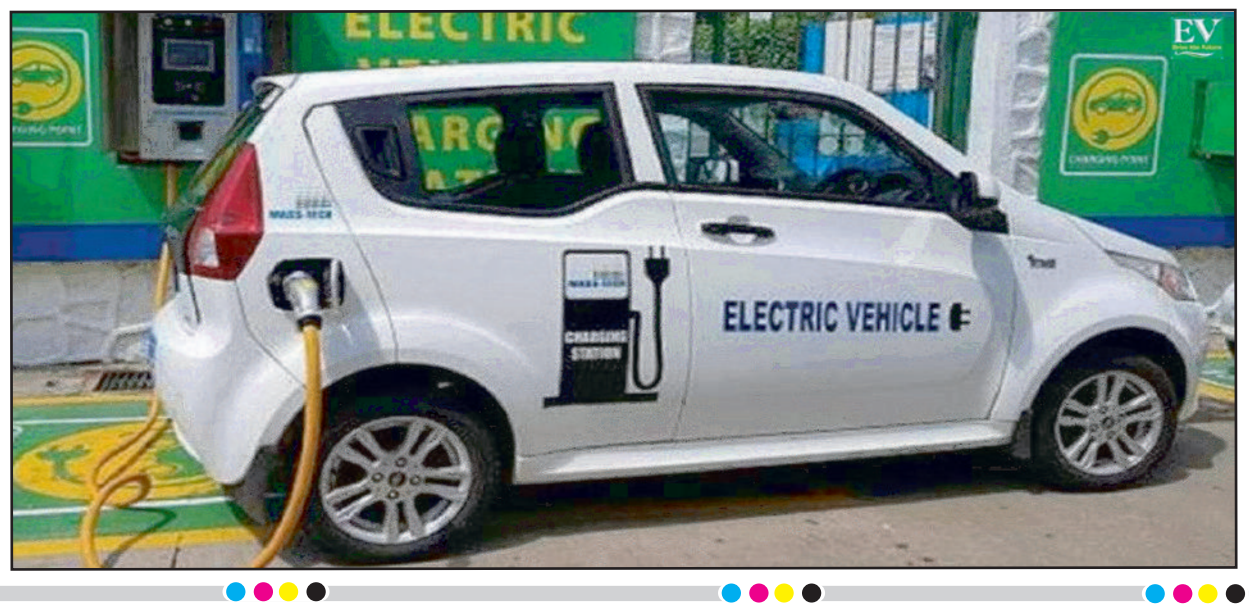

# सिनेमा , वेब मीडिया आज के समय में हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही



विजय गर्ग

सिनेमा, मीडिया और हिन्दी का नाता बहुत पुराना है। जैसे हिन्दी हिन्दुस्तान की जान है, वैसे ही हिन्दुस्तान में हिन्दी के बगैर सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा और मीडिया का योगदान बहुत ही अतुल्य रहा है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में सिनेमा और मीडिया ने हिन्दी को जीवनदान दिया है। आज विदेशियों को अपना प्रचार करना होता है, चाहे वह सिनेमा का हो, चाहे उनके उद्योग का हो, उन्हें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ता है, क्योंकि अधिकतर लोग सहज, सरल व सुबोध हिन्दी भाषा को जानते, समझते और बोलते हैं।भारत मेरी माता है,सिनेमा मेरा भाई है,और मीडिया मेरी बहन,कैसे जुड़े यह भाई, बहन और माता?हिन्दी से ही जुड़ा है,इन सबका नाता...मीडिया की कहानी उतनी ही पुरानी है, जितनी मानव जाति। आदिकाल में प्राणी चीखकर, चिल्लाकर, शोर मचाकर, विविध संकेतों और मुद्राओं द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करता था। सभ्यता के विकासक्रम में ऋषियों ने अपने भावों को वैदिक ऋचाओं द्वारा प्रेषित किया। पुराणों में आकाशवाणी के माध्यम से सूचना देने की परिपाटी सर्वविदित है। प्राचीनकाल में पठन-पाठन, मुद्रण के साधन के अभाव में जनसंचार के माध्यम गुरु या पूर्वज थे, जो मौखिक रूप से सूचनाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते थे। लेखन के प्रचलन के बाद भोजपत्रों पर संदेश लिखे जाते थे। गुप्तकाल में शिलालेखों द्वारा धार्मिक एवं राजनीतिक सूचनाएं जन सामान्य तक पहुंचायी जाती थीं।आज के समय में मीडिया किसी भी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मीडिया और हिन्दी पर बात करने से पहले हमें यह जानना चाहिए कि मीडिया क्या है? मीडिया हमारे चारों ओर मौजूद है, टी.वी., रेडियो, पत्र-पत्रिका, इंटरनेट जिन्हें हम रोज सुनते और पढ़ते हैं। यह चप्पे-चप्पे की खबर पल-पल में आम आदमी तक पहुंचाता है, क्योंकि मीडिया हमारे काफी करीब रहता है। हमारे चारों ओर यह मौजूद है, तो निश्चित-सी बात है, इसका प्रभाव भी हम पर और हमारे समाज पर पड़ेगा। पत्रकारिता संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी है। जीवन के आशा-निराशा, सफलता-असफलता को अभिव्यक्ति देने का दावा हिन्दी के पत्र करते हैं। कारण साफ है पूरे संसार में हिन्दी से सरल और दूसरी भाषा नहीं है। इसकी देवनागरी लिपि ब्राह्मी से विकसित है, जो सर्वाधिक वैज्ञानिक है। हिन्दी-पत्रकारिता किसी वर्ग, वर्ण, जाति या क्षेत्र की भाषा न होकर समग्र राष्ट्र की अभिव्यक्ति का माध्यम है। वह राज्यों के बीच सम्पर्क-सूत्र स्थापित करने वाली कड़ी के रूप में है।हिन्दी-पत्रकारिता का इतिहास उदन्त मार्तण्ड से शुरू हुआ, जिसका प्रकाशन श्री युगुलकिशोर ने 30 मई, सन 1823 ई. को कलकत्ते के कोल टोला (आमडाल्ला गली) से किया। इस साप्ताहिक पत्र का लक्ष्य हिन्दी और हिन्दवासियों का हित साधना था। सन 1826 से 1884 ई. तक के काल को प्रवृत्ति की दृष्टि से उदबोधन-काल कहा गया। इस काल में उदन्त मार्तण्ड, समाचार सुधावर्षण, बंगदूत, बनारस अखबार, कविवचन सुधा, बालाबोधिनी, हिन्दी प्रदीप, भारत मित्र, ब्राह्मण जैसे कई पत्रों ने हिन्दी भाषा के माध्यम से भारत के निवासियों में नवजीवन शक्ति का संचार किया।सन 1885 से 1919 ई. तक की अवधि जागरण-काल है। भारत की युवा पीढ़ी इस समय जाग्रतावस्था में आयी। हिन्दोस्तान, भारत भ्राता, हिन्दी बंगवासी, जासूस, सरावती, स्वदेश, प्रताप, भारतबन्धु आदि पत्रों ने राष्ट्रीय अवधारणा को सर्वग्राह्य बनाया। महामना मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, बालमुकुन्द गुप्त, गणेशशंकर विद्यार्थी- जैसे तेजस्वी पत्रकारों ने हिन्दी- पत्रकारिता के माध्यम से भारत के हम और हमारा भारत प्यारा, स्वतंत्रता है जन्मसिद्ध अधिकार हमारा के मन्त्र को जन-जन में प्रचारित किया। सन 1920 से 1947 ई. के मध्य महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष तीव्र हुआ, जिसमें हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अविस्मरणी है। आज, भविष्य, प्रताप, प्रभा, वर्तमान, चांद, समय, हंस,



सुधा, गदर ने क्रांति की लहर ला दी।आजादी के बाद हिन्दी-पत्रकारिता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नव निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध हुई। एन 1948 से 1974 ई. तक की अवधि को नव निर्माणकाल की संज्ञा से अभिहित किया गया है। नयी दुनिया, आजाद हिन्द, राष्ट्रदूत, पंचायतराज, पंजाब केसरी, उजाला, दैनिक, विश्वमित्र, लोकमान्य, गुणधर्म, धर्मयुग आदि पत्रों ने राष्ट्र को निर्माण की एक नई दिशा दी।सन 1975 ई. से अब तक के समय को बहुउद्देशीय काल कहा गया है। जब किसी भारतीय जन-मानस में कोई धडक़न पैदा होती है, तो पलक झपकते ही हिन्दी-पत्रों द्वारा वह धडक़न हजारों दिलों की धडक़न हो जाती है।इस भूमण्डलीकरण के युग में मीडिया कई रूपों में अपना काम कर रही है। उदाहरण के तौर पर विज्ञापन मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, डिजिटल मीडिया, हाइपर मीडिया, मल्टी मीडिया, प्रिंट मीडिया, प्रकाशित मीडिया, मास मीडिया, प्रसारण मीडिया, समाचार मीडिया आदि। वेब मीडिया आज के समय में हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इसी के द्वारा हिन्दी भाषा का वैश्वीकरण हुआ है। वेब मीडिया का ही प्रभाव है कि अमेरिका, यूरोप और रूस- जैसे महाद्वीपों में हिन्दी-गोष्ठियां आयोजित की जाती है और साहित्य-पुरस्कार आयोजित किये जा रहे हैं और हिन्दी-सम्मेलन रखे जाते हैं। जो हिन्दी और हिन्दी-प्रेमियों के लिए वाकई गौरव की बात है। आज ब्लॉग, फेसबुक, ट्वीटर, यू ट्यूब के माध्यम से पल-पल की खबर लोगों तक पहुंच जाती है। ये वेब मीडिया का ही प्रभाव है कि जहां पहले हिन्दी-माध्यम के युवा नौकरियों को तरसा करते थे, वहीं आज हिन्दी कॉल सेंटरों में, प्रकाशन घरों में अनुवादकों की तथा विदेशों में हिन्दी-शिक्षकों की बड़ी भारी मांग है। आज वेब मीडिया द्वारा हिन्दी विश्वगगन में अपनी उड़ान भर रही है।मीडिया के साथ ही हमारे जीवन में फिल्मों का अहम स्थान है। भारतीय सिनेमा का सफर 03 मई, 2013 को सौ साल पूरे कर चुका है। वर्ष 1913 में इसी दिन भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चन्द्र जनता को दिखाई गयी थी। इस फिल्म का निर्माण सिनेमा की आधारशिला रखने वाले दादा साहेब फालके ने किया था। देश बदलता रहा है और उसके साथ-साथ फिल्में भी कुछ-कुछ बदलती रहीं। 1930 वह वर्ष था, जब महात्मा गांधी दाण्डी मार्च पर निकले थे। उन्होंने फैसला कर लिया था कि अंग्रेजों द्वारा थोपे गये उन तमाम कानूनों को तोड़ेंगे, जो अन्याय के प्रतीक हैं। 1931 में भारतीय हिन्दी-फिल्मों ने भी बोलना शुरू कर दिया। फिल्मकार अर्देशिर ईरानी की आलम आरा रिलीज हुई। 1935 में वी शान्ताराम की अमृत मन्थन रिलीज हुई। ये हिन्दी-फिल्मों का ही असर है कि जो लोग फिल्मों को बुरा माध्यम समझते थे, वे भी फिल्मों की उपेक्षा नहीं कर पा रहे थे। जब अच्छे घरों के युवक-युवतियां भी फिल्मों में आने लगे। के.एल. एहगल, सोहराब मोदी मोतीलाल, अशोक कुमार, पृथ्वीराज कपूर- जैसे अभिनेता उभरे और इन्हीं के माध्यम से हिन्दी भाषा भी घर-घर में उभरी। 1940 में फिल्मी माहौल कुछ गम्भीर होने लगा। देविका रानी, वी. शान्ताराम, के.ए. अब्बास, कमाल अमरोही इत्यादि प्रमुख अभिनेता रहे। आजादी की चाहत इस दशक में शिखर पर थी। गांधीवादी, माक्र्सवादी या समाजवादी प्रभाव हिन्दी-फिल्मों में स्पष्ट दिखने लगा था। वर्ष 1945-46 में दिलीप कुमार की फिल्म मिलन आयी। 1950 का दौर आदर्श दौर है। इस दौर में फिल्मकारों के दिमाग में भी देश और समाज के प्रति चिन्तन हावी था। गुरुदत्त, बिमल रॉय, राजकपूर, देव आनन्द आदि का चरम दौर है। इस दौर में आवारा, मदर इण्डिया, और जागते रहो- जैसी हिन्दी-फिल्मों ने पूरे समाज को यथार्थ का आईना दिखा दिया। सन्1962 में भारत को युद्ध में पराजय मिली, लोग निराश थे, नेहरू और उनके युग की विदाई हुई। 1965 में भारत को फिर युद्ध लडऩा पड़ा, ऐसे में हिन्दी गीत-संगीत और प्रेम ने टूटे व घायल दिलों पर मरहम लगाने का काम किया। 1965 में गाइड व संगम रिलीज हुई, जिसने समाज और देश को काफी कुछ सिखाया। 1970 के दशक में लोगों में असंतोष की भावना आ चुकी थी। 1971 में कमाल अमरोही की फिल्म पाकिजा का अब यह गाना बजा कि इन्ही लोगों ने ले लीन्हा दुपट्टा मेरा, तो मानो यह एहसास हुआ कि भारत देश की धरती गुहार लगा रही है कि उसके साथ बहुत बुरा हो रहा है। 1975 में शोले फिल्म ने घर-घर में तहलका मचा दिया। उसके लिखे हुए संवाद हिन्दीतर भाषी लोगों में भी खूब प्रचलित हुए। 1985 में राजकपूर ने राम तेरी गंगा मैली का निर्माण किया। यह फिल्म स्त्रियों के बीच भी बहुत चर्चित हुई। 1990 के दशक में हिन्दी फिल्मी समाज ने समझ लिया कि खुद को बदलना होगा। प्रवासी भारतीयों के लिए स्वर्ण युग शुरू हुआ। सुभाष घई की परदेश हो या करण जौहर की कुछ-कुछ होता है- जैसी फिल्मों के द्वारा हिन्दी भाषा, गीत-संगीत, भारत देश से प्रेम को बढ़ावा मिला, जिसने दुनियाभर में बसे भारतवंशियों को लुभाया। 2000 के प्रथम दशक में मध्यम वर्ग के जो सपने पिछले वर्षों में साकार नहीं हुए थे, वे इस दश में साकार होने लगे। थ्री इडियट्स- जैसी फिल्म भी आयी। 2010 के दशक की शुरूआत में पूरी दुनिया को आर्थिक मन्दी से गुजरना पड़ा। देश के सच से भागते विदेशी निवेशकों, कम्पनियों, सरकारों, नेताओं के लिए यह तोरे नैना बड़े दगाबाज रे...। इस तरह समय-समय पर हिन्दी-फिल्मों ने भारतीय संस्कृति, देश-प्रेम, नैतिक मूल्य, स्त्री-जागरण के प्रति लोगों में एक जोश पैदा किया।इस प्रकार हम देखते हैं कि सिनेमा, मीडिया और हिन्दी का नाता बहुत पुराना है। जैसे हिन्दी हिन्दुस्तान की जान है, वैसे ही हिन्दुस्तान में हिन्दी के बगैर सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा और मीडिया का योगदान बहुत ही अतुल्य रहा है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में सिनेमा और मीडिया ने हिन्दी को जीवनदान दिया है। आज विदेशियों को अपना प्रचार करना होता है, चाहे वह सिनेमा का हो चाहे उनके उद्योग का हो, उन्हें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ता है, क्योंकि अधिकतर लोग सहज, सरल व सुबोध हिन्दी भाषा को जानते, समझते और बोलते हैं।आज चाहे मीडिया हो या सिनेमा पारिभाषिक शब्दावली की कमी, कार्यशालाओं की कमी, सम्पूर्ण भारतवर्ष के रीति-रिवाज, संस्कृति, खान-पान, व्रत-उपवास आदि की शाब्दिक कमी की वजह से मीडिया और सिनेमा को कई दिक्कतों का सामाना करना पड़ा रहा है। मु_ीभर लोग अपने शासन व वर्चस्व को बनाये रखने के लिए हिन्दी भाषा का विरोध कर रहे हैं। मीडिया व सिनेमा की चाहे कितनी ही सीमाएं क्यों न हों, जीवन, जगत और जिज्ञासा के अन्तः सूत्रों को जोडऩे वाली यही हिन्दी मीडिया और सिनेमा जो अपने अद्यतन प्रयोगों, विश्लेषण के कारण लोगों के दिलों में राज कर रही है, मेरी दृष्टि में वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी-मीडिया व सिनेमा विश्वस्तर पर सभी के दिलों में राज करेगा। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, यह एक केन्द्रीय संस्था है, जो अच्छे सिनेमा को बढ़ावा दे रही है।आज सूचना और प्रोद्यौगिकी व भूमण्डलीकरण के दौर में राष्ट्र का विराट पुरुष जाग उठा है। नयी सुबह को नये मानव गढऩे में हिन्दी-मीडिया व सिनेमा पुरसर है। भले ही लोगों की दृष्टि में इसमें कुछ कमियां हों, पर वह प्रकाशोन्मुखी है। भारत की अखण्डता, सर्वधर्म समभाव, विश्वबन्धुत्व की भावना को पुष्ट करने के लिए मीडिया व सिनेमा असत्य, अशिव, असुन्दर पर सत्यं शिवं सुन्दरम् का शंखनाद कर रही है, जो शुभद और सुखद ह आखिर हिन्दी से जिसे प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।

*सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब*

# चंदेल वंश की महानतम वीरांगना : रानी दुर्गावती

वर्तमान के मध्य प्रदेश एवं कुछ भाग उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में 9वीं से 15वीं शताब्दी तक चंदेल राजवंश का शासन रहा। इतिहासकार आर.सी. मजूमदार (1977) द्वारा लिखित पुस्तक के अनुसार 831 ई. से लेकर 1315 ई. तक खजुराहो, कालिंजर एवं महोबा से इन राजाओं ने मध्यकालीन युग में बुंदेलखंड नामक भौगोलिक क्षेत्र एवं कुछ आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। हिमाचल प्रदेश में 697 से 1849 ई. में एक राज्य के रूप में तथा 1849 से 1948 तक एक रियासत के रूप में कहलूर रियासत में चंद्रवशी चंदेल राजपूत वंश का शासन रहा। यद्यपि राजा वीर चंद 697-738 ई. तक इस राज्य के संस्थापक रहे, लेकिन इसका नाम राजा कहल चंद, जिनका शासन 890-930 ई. के आसपास रहा, के नाम पर रखा गया। इस कहलूर रियासत में अंतिम शासक राजा आनंद चंद रहे, जिन्होंने कहलूर रियासत की बागडोर 1933 से संभाली तथा ताउम्र 12 अक्तूबर 1983 तक राजा की पदवी को सुशोभित करते रहे।

स्वतंत्रता के पश्चात राजा आनंद चंद ने भारत की संसद के ऊपरी सदन राज्य सभा में बिहार से प्रतिनिधित्व किया। सन् 1952-1957 तक लोकसभा सदस्य रहे। इससे पहले 12 अक्तूबर 1948 से 26 जनवरी 1950 तक बिलासपुर के मुख्य आयुक्त भी रहे। लगभग 1400 से अधिक वर्ष के चंदेल वंश इतिहास ने इस देश को नारी शक्ति की विरासत के रूप में आज तक की सर्वश्रेष्ठ वीरांगनाओं में से एक रानी दुर्गावती भी दी है। रानी दुर्गावती मात्र रानी ही नहीं, लेकिन अतीत का गौरव और वर्तमान समय की पीढियों की आदर्श हैं। 5 अक्तूबर को रानी दुर्गावती का 500वां जन्म दिन है। इस महारानी का प्रेरक स्मरण 500 वर्षों के बाद भी मन को गौरवान्वित एवं शरीर को प्रफुल्लित करता है। रानी दुर्गावती का नाम भारत की महानतम् वीरांगनाओं की सबसे अग्रिम पंक्ति में आता है जिन्होंने मातृभूमि और अपने आत्म सम्मान की रक्षा हेतु अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। 5 अक्तूबर 1524 को दुर्गाष्टमी के दिन नवरात्रि का उत्सव चल रहा था। कालिंजर के राजा कीरत सिंह चंदेल के घर एक पुत्री का जन्म हुआ, इसलिए नामकरण किया दुर्गावती। रानी का जन्म कालिंजर (उत्तर प्रदेश) के बुंदेलखंड क्षेत्र में बांदा जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाले एक ऐतिहासिक दुर्ग में हुआ। यह विश्व धरोहर स्थल प्राचीन नगरी खजुराहो के निकट ही स्थित है। कालिंजर दुर्ग भारत के सबसे विशाल और अपराजेय किलों में एक माना जाता है। चंदेलों द्वारा बनाया गया यह किला चंदेल वंश के शासनकाल की भव्य वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण है।

यह किला भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। जब चंदेल शासक आए तो इस पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक और हुमायुं ने आक्रमण कर इससे जीतना चाहा, लेकिन कामयाब नहीं हो पाए। अंत में 1569 में अकबर ने यह किला जीतकर बीरबल को उपहार में दिया। बाल्यकाल में ही राजा कीरत सिंह ने राजकुमारी दुर्गा को शस्त्र चलाना सिखाया और अपने कौशल के कारण कुछ दिनों में ही दुर्गावती शस्त्र चलाने में प्रवीण हो गई। इसकी कीर्ति आसपास के क्षेत्रों में फैल गई। गोंडवाना क्षेत्र के पराक्रमी राजा वीर दलपत शाह के पास दुर्गावती के संस्कारों के साथ-साथ पराक्रम की बातें भी पहुंच गई। दलपत शाह भी एक सुंदर एवं पराक्रमी राजकुमार थे। इस तरह चंदेल राजवंश की राजकुमारी जो कि बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र, शौर्यवान, धर्मनिष्ठ, राष्ट्रभक्त और निर्णय लेने में दक्ष थी, ने एक जनजाति समूह के बलिष्ठ युवा राजकुमार दलपत शाह से अपना विवाह करना स्वीकार किया। रानी दुर्गावती एवं दलपत शाह के प्रेम और परिणय की कथाएं आज भी उस क्षेत्र में प्रचल्लित हैं। कुछ वर्षों बाद 1545 ई. में इनके एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम वीर नारायण सिंह रखा गया। दुर्भाग्य से रानी दुर्गावती एवं राजा दलपत शाह का दांपत्य जीवन मात्र 5 वर्ष का ही रहा। राजा की अल्प आयु मृत्यु के उपरांत संकट की घड़ी में रानी ने अपना धैर्य नहीं खोया तथा बड़ी हिम्मत के साथ काम लिया। प्रजा ने एक प्रजावत्सल मां का रूप देखा। पति के पीछे सती हो जाने के बदले रानी ने विधवा रहते हुए भविष्य को संवारने का काम किया। आदर्श कामकाज के लिए इतिहास में जिन राज्य शासनों का उल्लेख है, उनमें गोंडवाना भी शामिल है। पति की अकस्मात मृत्यु के बाद अपने पुत्र का राज्याभिषेक करके रानी ने स्वयं गढ़मंडला के शासन की कमान संभाली। रानी दुर्गावती के गोंडवाना साम्राज्य की संपन्नता और समृद्धि की चर्चा कड़ा और मानिकपुर के सूबेदार आसफ खान द्वारा मुगल दरबार में की गई। धूर्त और चालाक अकबर ने लूट और विधवा रानी को कमजोर समझते हुए तथा बलपूर्वक गोंडवाना साम्राज्य हथियाने के उद्देश्य से रानी को आत्म समर्पण के लिए धमकाया। उसने महारानी को यह संदेश भिजवाया 'अपनी सीमा राज की, अमल करो परमान। भेजो नाग सुपेत सोई, अरू अधार दीवान।'

# मिलावटी आहार से बढ़ती बीमारियां

विजय गर्ग

पिछले कुछ समय में छोटे बच्चों और युवाओं में हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर से मौत के मामले तेजी से बढ़े हैं। कवक यानी 'फंगस' और विषाणु से होने वाली खतरनाक बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है। विश्व नाक स्वास्थ्य संगठन की रपट के मुताबिक 2022 में देश में कैंसर के 14.1 लाख नए मामले सामने आए, जिसमें नौ लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई। रपट के मुताबिक वर्ष 2050 तक दुनिया भर में कैंसर की बीमारी और बढ़ेगी। कैंसर पर शोध की अंतरराष्ट्रीय संस्था आइएआरएसी के अनुसार पिछले वर्षों में मुंह, गला और स्तन कैंसर में बढ़ोतरी के अलावा पैंतीस प्रकार के कैंसर में वृद्धि हुई है। पेट, मलाशय, प्रोस्टेट, त्वचा और रक्त कैंसर एकाएक वृद्धि हैरान करने वाली है। देश में जहां लोगों में मोटापा बढ़ रहा है, वहीं यह कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी का कारण भी बन रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक 2035 तक भारत में कैंसर से मरने वालों की संख्या पैंतीस लाख प्रति वर्ष तक पहुंच जाएगी। कैंसर का कारण मानव शरीर कोशिकाओं में असामान्य वृद्धि और उनका विभाजन है। रसायन युक्त भोजन सामग्री और खराब जीवन शैली भी इसकी वजह है 'सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट' (सीएसई) की रपट के मुताबिक शहरों में रह रहे 93 फीसद बच्चे सप्ताह में एक दिन डिब्बाबंद खाद्य सामग्री खाते हैं, जबकि 53 फीसद बच्चे प्रतिदिन तुरंता आहार यानी 'जंक फूड' खा हैं। शहरों से लेकर गांवों के गरीब बच्चों तक की दिनचर्या 'जंक फूड' से शुरू हो रही है। वर्ष 2011 से 2021 की अवधि में देश में 'जंक फूड' का कारोबार 13.37 फीसद की दर से लगातार बढ़ रहा है। इससे देश के ग्यारह फीसद बच्चे मोटापे का शिकार हो चुके 'हैं। 'लांसेट पत्रिका की शोध रपट 2022 के मुताबिक 1.25 करोड़ बच्चे अपेक्षित वजन से अधिक मोटे थे। यह संख्या आंकड़ों की तुलना में 25 गुना अधिक बढ़ रही है। इसकी न91 91 इसकी वजह देश में बहुराष्ट्रीय कंपन मिलना है। विदेश व्यापार को अनुमति मिलने के बाद कंपनियों को खानपान की सामग्री सहित सभी तरह के व्यापार की खुली अनुमति । से देश में में प्रसंस्कृत डिब्बाबंद सामग्री का चलन बहुत तेजी से बढ़ा है।

वर्ष 1990 के दशक देश में गरीब से लेकर अमीर और छोटी से लेकर बड़ी उम्र तक के लोग डिब्बाबंद चीजों को तुरंत भूख मिटाने की खाद्य सामग्री मान चुके हैं। बड़ी संख्या में आम जन अब काम के दौरान घर से बना नाश्ता ले जाने के बजाय, बजार की खाद्य सामग्री पर आश्रित हो हो चुके हैं। देश में बीस वर्ष से अधिक उम्र के सात से अधिक वयस्क, जिनकी दैनिक भोजन सामग्री में अति प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ शामिल हैं, स्वयं को तंदुरुस्त नहीं मानते हैं डिब्बाबंद भोजन में अधिक नमक, शीतल पेय में कृत्रिम मिठास के साथ 'प्रिजर्वेटिव' की अत्यधिक मात्रा यकृत, गुर्दे की बीमारी, ब्रेन टयूमर आदि सहित कैंसर रोग के लिए जिम्मेदार हैं। कृत्रिम पेय पदार्थ, चाकलेट और डिब्बाबंद फलों के रस से मूत्र में संक्रमण की शिकायतें देश में तेजी से बढ़ी हैं। सीएसई के आंकड़े बताते हैं कि देश में 71 फीसद आबादी स्वस्थ आहार नहीं ले रही है। जिसकी वजह से देश में प्रतिवर्ष 17 लाख लोग मधुमेह, कैंसर, तपेदिक और हृदय संबंधी बीमारियों से मौत का शिकार हो रहे हैं।

अमेरिका के 'इंस्टीट्यूट फार हेल्थ मैटिक्स एंड पोल्यूशन' की रपट के अनुसार सिगरेट और शराब के बाद विश्व में अधिक मौत तय मात्रा से अधिक नमक खाने से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रति वयस्क प्रतिदिन 02 ग्राम से अधिक मात्रा की अनुमति नहीं देता है 'टाक्सिक्स लिंक' नामक गैरसरकारी संगठन के एक शोध में दावा किया गया है कि देश में बढ़ते कैंसर और दिल के रोग की एक वजह नमक और चीनी में मौजूद प्लास्टिक के सूक्ष्म कण हैं। डिब्बाबंद सामग्री में चिंता का विषय नमक या शक्कर ही है। अमेरिका की एक सौंदर्य प्रसाधन कंपनी के विरुद्ध वहां की हजारों महिलाओं ने इस आरोप



के साथ मामला दायर कराया है कि उसके उत्पाद से 'मेसोथेलियोमा कैंसर' फैल रहा है। जबकि भारत में इन उत्पादों को उच्च गुणवत्ता का बता कर धड़ल्ले से बेचा रहा है शारीरिक सौंदर्य की उक्त 'को शरीर पर अधिक समय तक प्रसाधन टिकाऊ बनाने के लिए 'एस्बेस्टस' उपयोग होता है। ₹ब्रिटिश मेडिकल टेसबर्ड' की रपट के मुताबिक सौंदर्य सामग्री में एस्बेस्टस उपलब्ध तकनीक से पकड़ना आसान नहीं है। इसलिए सौंदर्य प्रसाध कंपनियां अपने उत्पादों । उत्पादों को विषाणुमुक्त होने का दावा जरूर करती हैं, लेकिन सौंदर्य ₹टेल्कम और बेंजीन ₹कीर₹ मात्रा होती है, जो कैंसरकारक है। है देश में खाद्य सामग्री, दवाइयों सहित दैनिक उपयोग की सामग्री की निगरानी और जांच के लिए संबंधित विभागों के पास न तो पर्याप्त कर्मचारी हैं, न ही जांच प्रयोगशालाएं। राज्य सरकारों के पास ऐसे विभाग चलाने के लिए वित्तीय बजट की कमी है।

प्रसाधन फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथारिटी आफ इंडिया' (एफएसएसआइ) के नियम अनुसार एक खाद्य निरीक्षक के पास अधिकतम दो हजार दुकानों की निगरानी का जिम्मा होना चहिए, लेकिन राज्यों में एक-एक खाद्य निरीक्षक पर पंद्रह हजार दुकानों तक की निगरानी का दायित्व है। वर्ष 2022 2 तक देश देश में मात्र 224 खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएं थीं। जिसमें सरकारी प्रयोगशालाओं की संख्या सौ से ज्यादा नहीं हैं। प्रयोगशालाओं कमी के कारण समय पर जांच न होने से मिलावट करने वाले दंड क्रिया से बाहर हो जाते हैं।

बीते समय में हांगकांग और सिंगापुर के एक भारतीय मसाला कंपनी के समय के बाद भी भारतीय बाजारों में इन उत्पादों का विक्रय आयात पर रोक के बाद नहीं रोका गया, क्योंकि भारतीय प्रयोगशालाओं की स्पष्ट जांच रपट नहीं थी। जबकि कंपनी के उत्पाद पर कैंसरकारक 'प्रिजर्वेटिव' की अधिक मात्रा का उपयोग विदेशी प्रयोगशालाओं में पाया गया। भारतीय कानून में शिथिलता और जांच में देरी के कारण मिलावट करने संबंधी अपराध कारगर रूप से रोका नहीं जा सका है। बावजूद इसके, सरकारी जांच में कसावट लाने, खाद्य सामग्री की गुणवत्ता वत्ता और नागरिकों की सेहत पर कहीं कोई चिंता नहीं दिखती। बीते वर्षों में जनता की मांग पर राजस्थान और मध्यप्रदेश सहित कुछ राज्य सरकारों ने मिलावट करने पर सजा तो बढ़ा दी है, लेकिन कानून में संशोधन कर जांच प्रक्रिया को दुरुस्त नहीं किया सका है। जांच, सुनवाई की लंबी प्रक्रिया और भ्रष्टाचार अपराधी राधी को दोषमुक्त करने में मददगार ही साबित रहे हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण ने गुणवत्ता और दोषपूर्ण उत्पादों ब्रिकी, निर्माण और भंडारण पर 1 पर रोक लगाने के उद्देश्य से चौदह अंकों के पंजीयन को अनिवार्य किया है, ; लेकिन आज भी साठ फीसद खाद्य सामग्री विक्रेताओं के पास लाइसेंस नहीं है। वजह, निगरानी तंत्र की कमी। सड़कों के किनारे धड़ल्ले से अस्वास्थ्यकर खाद्य सामग्री बिकती है। मिलावटी सामग्री से हादसा होने की दशा में प्रशासन को खोज पाना आसान नहीं है। सच तो यही है कि सरकारी तंत्र कोई भी घटना होने तक सोता रहता है।

विजय गर्ग

# परिधान के रंग

दुनिया के कई देशों में ऐसी दुकानें खुल रही हैं, जहां कई तरह के कपड़े आदि किराए पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। कोट, सोने के कपड़े, तैरने की पोशाक, बच्चों और बड़ों के लिए जूते वगैरह । सवाल है कि आखिर वे कौन लोग हैं, जो पहनने इन कपड़ों को खरीदने के बजाय इन्हें कुछ दिनों के लिए किराए पर ले रहे हैं। जाहिर है, इसमें कपड़े की जरूरत की अवधि के पैमाने के समांतर कमजोर होती आर्थिक परिस्थितियों की भूमिका भी होगी। कह सकते हैं कि हमारे समाज की परंपराएं वहां नए अंदाज में लौट रही हैं। हमारे यहां पुराने कपड़ों में से नए छोटे बच्चों के लिए सिल लिए जाते थे। बड़े हो चुके बच्चों के कपड़े छोटे बच्चे, भाई बहन पहनते थे। पिता के कपड़े पुत्र और माताओं की साड़ियां, सूट, स्वेटर, कोट आदि बेटियां पहन लेती थीं। संभवत अब भी अनेक पिता अपनी कद-काठी के पुत्र के वस्त्र पहनने के लिए तैयार हो जाएंगे, लेकिन शायद पुत्र ऐसा न कर पाएं। विकसित होती या फिर बदलती आर्थिक स्थितियों ने भी इस स्थिति को काफी बदला है । मगर जब पुराने होते जा रहे इंसानों की परवाह कम होती गई है तो पुराने कपड़ों की संभाल कैसे रहेगी ! दिलचस्प यह है कि वहां एक साल के बच्चे के ज्यादातर कपड़े किराए पर लिए जा रहे हैं। बच्चे बड़े होते रहते हैं और कपड़े महंगे । महंगे कपड़े किराए पर लेना उचित समझते हुए खरीदने से बेहतर मान लें तो हमारे यहां भी ऐसा शुरू हो सकता है।

हमारा देश और समाज वैसे भी ज्यादा दिखावे वाला, फैशनपरस्त होता जा रहा है। अब तो नए कपड़े खूब खरीदने का रुझान जिंदगी का जरूरी हिस्सा हो गया है। यह बात दीगर है कि उनमें से काफी पोशाकें तो आपस में उलझी, परेशान पड़ी रहती हैं। इस बीच और नए कपड़े खरीद लिए जाते हैं। कुछ वस्त्रालय पुराने कपड़े लेकर नए कपड़ों में छूट का कूपन देते हैं, जिसका नियमित ग्राहक फायदा उठाते हैं, लेकिन वस्त्र बढ़ते जाते हैं। विवाह में कम न होते दिखावे ने लहंगों के इस्तेमाल और खरीदारी में खूब बढ़ोतरी की है। कपड़े की दुकान में लहंगा मिलना आज जरूरी हो गया है। अनेक दुल्हनें भारी लहंगे का बोझ पहनकर कुछ देर बाद थक जाती हैं, लेकिन विवाह के पारिवारिक, पवित्र, पारंपरिक, सांस्कृतिक, सामाजिक बंधन में मनपसंद लहंगा पहन कर ही प्रवेश करती हैं। हल्के से लेकर भारी वजन का लहंगा उपलब्ध कराया जा रहा है। अगर दुल्हन पतली, कमजोर हो तो लहंगे के साथ 'गैलस' भी दिए जा रहे हैं। शादी के बाद परिवारों में आपसी परेशानियां, पारिवारिक परिस्थितियां, नापसंद लहंगा बनकर आती हैं। धीरे-धीरे पुरानी हो रही नववधू अपना वह लहंगा भूल जाती है जो उसने दौड़- भाग करके कई दुकानें देखकर, मोल-भाव करने के बाद महंगा खरीदा होता है।

अक्सर बजट कुछ रहता है और खर्च कुछ और। कभी न कभी यह जरूर लगता है कि लहंगे पर बहुत खर्च हो गया । लहंगा किराए पर लेती तो ऐसा न लगता, लेकिन पुराना वस्त्र तो पुराना होता है ! इसीलिए ज्यादातर दुल्हनें नया लहंगा पहनना पसंद करती हैं। विवाह में प्रयोग के बाद लहंगे का गाउन वगैरह भी बनाया जा सकता है फिलहाल पच्चीस हजार कीमत की साड़ी एक दिन के लिए पांच सौ रुपए किराए में मिल जा सकती है। परिवार की महिलाओं, पड़ोसनों और सहेलियों ने तो एक दूसरे की साड़ियां कभी न कभी पहनी ही होती हैं। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग किस्म की साड़ियों का संग्रह बहुत महिलाओं के पास होगा, जिसमें दर्जन या सैकड़ों के हिसाब से चुनिंदा साड़ियां संभालकर रखी गई होंगी। दूल्हे के मनपसंद परिधान, सूट और अचकन वगैरह भी इन्हीं दुकानों पर जेब की क्षमता में किराए पर मिल जाते हैं। नए तो मिलते ही हैं।

इनमें से 'नेकी की दीवार' पर टांगे कपड़े काफी लोगों के काम आए होंगे, लेकिन ऐसा भी देखा गया कि कम प्रयोग किए कपड़े एक जगह रखे रह गए। शायद गलत जगह चुन लेने और खराब प्रबंधन के कारण उन वस्त्रों की दुर्गति हुई । कई संस्थाओं द्वारा पुराने वस्त्र इकट्ठा कर बांटने का अस्थायी सामाजिक सेवा कार्यक्रम रहता है। पहने और बेचे जा सकने वाले पुराने कपड़ों के बदले, स्टील के बर्तन वगैरह देने का सौदा करती हुई महिलाएं शायद अभी भी कई जगह आती होंगी। ऐसे कपड़े सप्ताह के किसी दिन, सड़क किनारे या बाजार की छुट्टी के दिन बिकते देखे गए हैं। हमारे यहां विदेश से दान में मिले कपड़े भी खूब बिकते हैं। बताया जाता है कि कुछ की गुणवत्ता बेहतर होती है।

पारिवारिक सदस्यों में तो ऐसा हो सकता है कि कपड़ों को बेहतर देखभाल के साथ रखा जाए, बार-बार पहना जाए। इस बारे में सभी छोटे बड़ों को निजी जिम्मेदारी लेनी चाहिए, खासतौर पर ऐसे कपड़े जो महंगे खरीदे हों, उनकी डिजाइन और माप बेहतर हो, रंग पसंद हो। इस तरह कुछ बचत भी की जा सकती है। ऐसे कुछ कपड़े तो हर इंसान की जिंदगी में आते ही हैं जो लंबे अरसे तक, बार-बार पहने जाते हैं । कुछ ऐसे भी होते हैं जो वक्त के साथ पसंद नहीं रहते या शरीर उनके काबिल नहीं रहता। ऐसे कपड़े अगर पहनने लायक हों तो जरूरतमंद तक जरूर पहुंचाने चाहिए।

# दस हजार मेगावाट की ग्रिड कनेक्टेड बैटरी स्टोरेज क्षमता लगाने की तैयारी, भारत में बढ़ रहा इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचलन

परिवहन विशेष न्यूज

इंडिया इनर्जी स्टोरेज एलायंस (आइईएसए) की तरफ से आयोजित एक सेमिनार में मित्तल ने बताया कि सरकार पहले ही इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए जरूरी बैट्रियों के घरेलू निर्माण को प्रोत्साहन करने की नीति लागू कर चुकी है। भारत में सिर्फ सरकार के स्तर पर ही बैट्री निर्माण का काम नहीं हो रहा बल्कि जो आंकड़े सामने आ रहे हैं उसके मुताबिक कई लैब और स्टार्ट अप भी है।

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार जल्द ही स्टेशनरी इनर्जी स्टोरेज (एसईएस) क्षमता लगाने के पहले चरण पर काम शुरू करने जा रही है। इसके तहत पहले चरण में देश में 10 हजार मेगावाट क्षमता के एसईएस लगाने के लिए जल्द ही प्रस्ताव आमंत्रित किये जाएंगे। ये बेहद अत्याधुनिक किस्म की बैट्री स्टोरेज संयंत्र होंगे, जो भारत के राष्ट्रीय ग्रिड से जुड़े होंगे और जरूरत के हिसाब से इन बैट्रियों से बिजली की आपूर्ति ली जाएगी।

**बड़े योजना पर हो रहा काम**

भारी उद्योग मंत्रालय के संयुक्त सचिव विजय मित्तल के मुताबिक इनर्जी स्टोरेज क्षमता लगाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और नीति आयोग के साथ एक वृहद योजना पर काम हो रहा है। इंडिया इनर्जी स्टोरेज एलायंस (आइईएसए) की तरफ से आयोजित एक सेमिनार में मित्तल ने बताया कि सरकार पहले ही इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए जरूरी बैट्रियों के घरेलू निर्माण को प्रोत्साहन करने की नीति लागू कर चुकी है।

**भारत में बढ़ रहा इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचलन**

वर्ष 2070 तक देश को नेट जीरो (शून्य प्रदूषण) का लक्ष्य हासिल करने के लिए घरेलू स्तर पर बैट्री निर्माण की प्रक्रिया और तेज करनी होगी। जिस तेजी से भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचलन बढ़ रहा है उसे देखते हुए वर्ष 2032 तक 6-9 लाख मेगावाट ऊर्जा क्षमता लीथियम बैट्री से बनानी होगी। सरकार की मदद से तकरीबन 40 हजार मेगावाट ऊर्जा क्षमता की बैट्री प्लांट लगाने पर काम शुरू हो चुका है। दरअसल, भारत में सिर्फ सरकार के स्तर पर ही बैट्री निर्माण का काम नहीं हो रहा बल्कि जो आंकड़े सामने आ रहे हैं उसके मुताबिक कई लैब और स्टार्ट अप भी इस क्षेत्र में बहुत ही उल्लेखनीय शोध कर रहे हैं।

## फेस्टिव सीजन से पहले आसमान छू रहा सोना, इन वजह से बढ़ रही है कीमत

भारत में सोना खरीदने की परंपरा काफी पुरानी है। महिलीओं को सोना खरीदना काफी पसंद है। जहां एक तरफ सोना सुंदरता में चार चांद लगाता है वहीं दूसरी तरफ यह निवेश के लिए भी काफी अच्छा ऑप्शन है। अगर सोने की कीमतों की बात करें तो इस साल सोने के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। हम आपको इस आर्टिकल में सोने की कीमतों के बढ़ने की वजह बताएंगे।

**नई दिल्ली।** फेस्टिवल सीजन में सोने (Gold) की खरीदारी में तेजी आती है। दीवाली से पहले धनतेरस पर लोग सोना-चांदी जैसे महंगी धातु खरीदना पसंद करते हैं। अभी त्योहारों का सिलसिला शुरू भी नहीं हुआ और उससे पहले ही सोने के भाव आसमान छूने लगे। ऐसे में खरीदारों के मन में सवाल आ रहा है कि आखिर सोने की कीमतों में क्यों तेजी आ रही है और इसके भाव में कबतक नरमी आ सकती है।

सर्राफा बाजार में सोने के दाम में आज भी तेजी देखने को मिली है। भारत में सोना 77,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। अगर आज सोने की कीमत की बात करें तो राजधानी दिल्ली में सोना 77,985.00 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया है। ऐसे ही कई राज्यों में सोने की कीमत बढ़ गई है।

सोने की कीमतों में तेजी आती है, लेकिन इस साल इनकी कीमतों में काफी ज्यादा वृद्धि देखने को मिली है। 1 जनवरी को जहां दिल्ली में सोना 65,000 रुपये था वह अब 77,000 रुपये के पार पहुंच गया है। अगर सोने की कीमतों में तेजी की वजह जानें को मुख्य वजह जियोपॉलिटिकल टेंशन है।

वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक की वजह से निवेशक सेफ इन्वेस्टमेंट के तौर पर सोने में निवेश करते हैं जिसकी वजह से सोने की मांग बढ़ जाती है और इसके दाम में भी इजाफा हो रहा है। वहीं, फेडरल रिजर्व के फैसले के बाद से भी सोने की कीमतों में तेजी आई। 18 सितंबर को फेड ने ब्याज दरों में 0.50 फीसदी की कटौती करने का फैसला लिया। फेड के फैसले के बाद डॉलर में नरमी आई और यह 100.51 पर आ गया। डॉलर के मूल्य में गिरावट भी सोने की कीमतों में इजाफा होने की वजह है।

गोल्ड के दाम बढ़ रहे हैं और ऐसे में लोगों आस लगाए बैठे हैं कि सोने के दाम में कब नरमी आएगी। फाइनेंशियल एक्सपर्ट के अनुसार इजरायल और हिजबुल्लाह के बीच बढ़ते संघर्ष और लेबनान में स्थिति बिगड़ने की वजह से गोल्ड की कीमतों में नरमी आने की उम्मीद नहीं है।

## ओपन एआई विवादों में घिरा, मीरा मुराती के इस्तीफे के बाद दो हाई-प्रोफाइल पर्सन ने भी दिया रेजिग्नेशन

OpenAI की मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी मीरा मुराती ने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद कंपनी के दो अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों बॉब मैकग्रे (मुख्य अनुसंधान अधिकारी) और बैरेट ज़ोफ़ (अनुसंधान के उपाध्यक्ष) को भी निकाला गया। ये सब होने के बाद OpenAI विवादों में घिर गया है। दरअसल माना जा रहा है कि OpenAI खुद को सार्वजनिक लाभ निगम के रूप में पुनर्गठित करने की सोच रहा है।

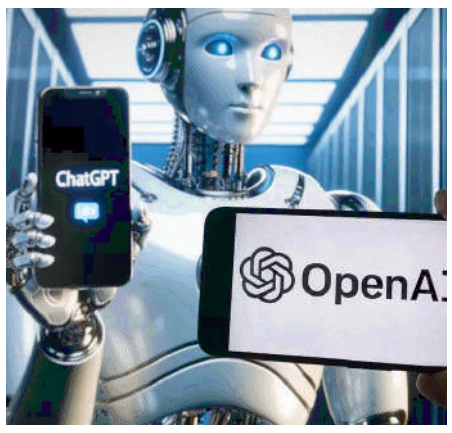


**नई दिल्ली।** आर्टिफिशेयल इंटेलिजेंस का नाम जब भी आता है तो OpenAI का जिक्र होता ही है। OpenAI एक तरह की नॉन-प्रॉफिट इंटेटिटी है। अब कंपनी के दो उच्च-स्तरीय कार्यकारी ने इस्तीफा दे दिया है। इस इस्तीफे के बाद कंपनी विवादों में घिर गई है। दरअसल, कंपनी ने संकेत दिया है कि वह प्रॉफिट कमाने वाली कंपनी बनेगी। इस संकेत के बाद विवाद खड़ा हो गया है।

कई संगठनों का कहना है कि अगर OpenAI भी प्रॉफिट कमाने वाली कंपनी बनती है तो कंपनी अपने AI उद्देश्यों से दूर जा सकती है।

**2015 में शुरू हुआ था OpenAI**

OpenAI की स्थापना नॉन-प्रॉफिट संस्था के रूप में वर्ष 2015 में हुई थी। साल 2019 में कंपनी ने एक लाभ-आधारित सहायक कंपनी की शुरुआत की थी। इसमें सर्विस के साथ-साथ बाहरी निवेश को भी अनुमति दी गई। इसमें निवेशख और कर्मचारी दोनों को एक निश्चित सीमा तक रिटर्न मिलता था।

**कैसे शुरू हुआ विवाद**

OpenAI का विवाद तह शुरू हुआ जब सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनी Microsoft ने निवेश किया। इस निवेश ने कंपनी के मुनाफे की ओर संकेत किया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार कंपनी सार्वजनिक लाभ निगम में पुनर्गठन करने पर विचार कर रही है। कंपनी के इस विचार पर अटकलें लगाया जा रहा है कि कंपनी वित्तीय चुनौतियों के समाधा के लिए यह फैसला लेगी। माना जा रहा है कि OpenAI का खर्च बहुत बड़ गया है, इस वजह से चालू वित्त वर्ष में कंपनी को 5 बिलियन डॉलर तक का घाटा हो सकता है।

अगर कंपनी सार्वजनिक लाभ निगम के रूप में पुनर्गठित होता है को कंपनी सुरक्षित एआई विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को खतरे में डाल सकता है। आलाचकों का कहना है कि मुनाफे की चाहत में कंपनी एआई सिस्टम को तैनात करने की दिशा में आक्रामक प्रयास कर सकती है। दरअसल, OpenAI की स्थापना एआई प्रौद्योगिकियों की नैतिक उन्नति को प्राथमिकता देने के लिए हुई थी।

**दो उच्च-स्तरीय कार्यकारी ने दिया इस्तीफा**

OpenAI के उच्च-स्तरीय कार्यकारी के इस्तीफे ने भी कंपनी को विवादों में खड़ा कर दिया है। हाल में कंपनी की मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी मीरा मुराती इस्तीफा दिया है। मीरा मुराती के इस्तीफे के बाद दो अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों, बॉब मैकग्रे (मुख्य अनुसंधान अधिकारी) और बैरेट ज़ोफ़ (अनुसंधान के उपाध्यक्ष) भी कंपनी से बाहर निकल गए।

बता दें कि OpenAI की जीपीटी-4 मॉडल के शुभारंभ में मीरा मुराती की महत्वपूर्ण भूमिका थी। मीरा मुराती ने इस्तीफा देते हुए कहा कि पिछले वर्ष अन्य सह-संस्थापक और वरिष्ठ शोधकर्ता ने कंपनी छोड़ दिया था। दरअसल, OpenAI लाभ-प्राप्त व्यवसाय मॉडल की ओर बढ़ रही है। ऐसे में कर्मचारी कंपनी छोड़ रहे हैं।

## रिजर्व बैंक से मिलेगा सस्ती ब्याज दरों का तोहफा? जानें क्या है एक्सपर्ट की राय

7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर के बीच आरबीआई की एमपीसी बैठक होने वाली है। इस बैठक के फैसलों का एलान भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के गवर्नर 9 अक्टूबर को करेंगे । बैठक में रेपो रेट को लेकर फैसला लिया जाएगा। पिछले साल फरवरी से रेपो रेट स्थिर बना हुआ है। आइए. जानते हैं कि आगामी बैठक को लेकर रियल एस्टेट सेक्टर के दिग्गजों का क्या कहना है।

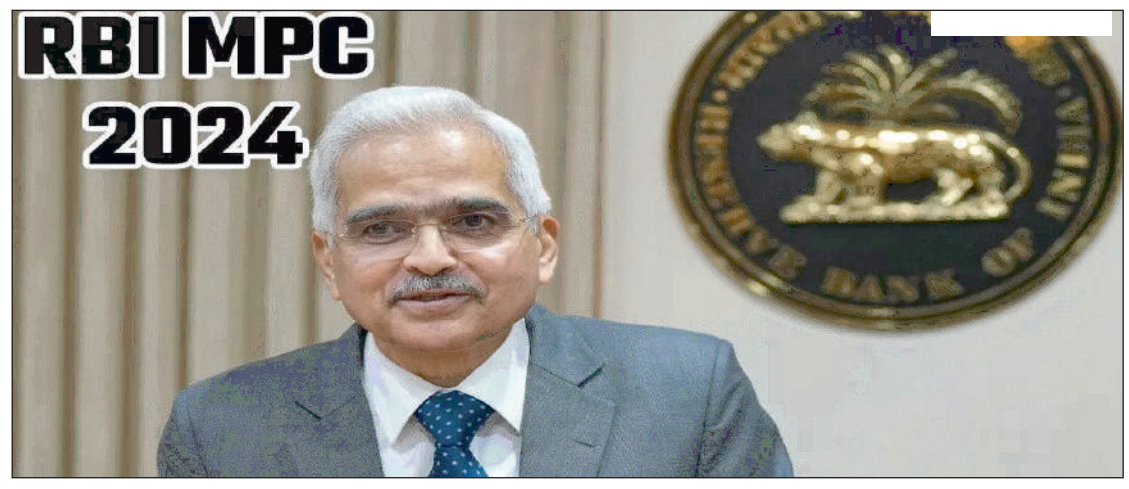


**नई दिल्ली।** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा बैठक 7 अक्टूबर 2024 से 9 अक्टूबर 2024 तक चलेगी। इस बैठक में रेपो रेट (Repo Rate) को लेकर फैसला लिया जाएगा। वर्तमान में रेपो रेट 6.5 फीसदी है। अमेरिका के फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में हालिया कटौती के बाद भारत में भी दरों में कमी की उम्मीद बढ़ गई है।

हालांकि, प्रमुख विशेषज्ञों का मानना है कि इस बैठक में कोई बदलाव नहीं होगा। एस एंड पी ग्लोबल अक्टूबर में कटौती की संभावना जता रहा है, जबकि एसबीआई इसे नकार रहा है। यूबीएस दिसंबर में कटौती की संभावना देख रहा है। रेपो रेट में स्थिरता न केवल बाजार में निवेश को प्रभावित करेगी, बल्कि ग्राहकों के लिए होम लोन और अन्य वित्तीय विकल्पों को भी आसान बनाएगी। इस बैठक के परिणाम रियल एस्टेट, बैंकिंग और उपभोक्ता वित्त में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं।

आइये जानते है कि रियल एस्टेट से जुड़े दिग्गजों की आरबीआई एमपीसी बैठक को लेकर क्या प्रतिक्रिया है।

**क्या है दिग्गजों की राय**

रहेजा डेवेलपर्स के नयन रहेजा के अनुसार एक स्थिर मौद्रिक नीति हमेशा रियल एस्टेट बाजार के लिए लाभकारी होती है। अगर रेपो रेट स्थिर रहता है तो बाजार में स्थिरता बनी रहेगी, जो निवेशकों के लिए एक सकारात्मक माहौल तैयार करती है। हमारे नए प्रोजेक्ट्स में मांग बढ़ रही है, और इस स्थिरता के कारण यह रुझान और तेज होगा। अगर रेपो रेट में कमी आती है, तो इससे बाजार में और अधिक निवेश आकर्षित होगा, जिससे विकास की संभावनाएं बढ़ेंगी। यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, और हम अपने काम में उच्च गुणवत्ता और समर्पण के साथ आगे बढ़ते रहेंगे।

स्थिर मौद्रिक नीति हमेशा रियल एस्टेट बाजार के लिए फायदेमंद होती है। अगर आने वाले सप्ताह में रेपो दर अपरिवर्तित रहती है, तो यह एक सकारात्मक विकास होगा, जिससे आवासीय और वाणिज्यिक परियोजनाओं को आत्मविश्वास के साथ बढ़ने में मदद मिलेगी। घर खरीदने वालों को किफायती विकल्पों से भी लाभ होगा। इसके अतिरिक्त, दरों में कोई भी कमी घरों में निवेश करने के लिए और अधिक ग्राहकों को प्रोत्साहित करेगी, जिससे पूरे क्षेत्र में मांग बढ़ेगी।

**संजीव अरोड़ा, निदेशक, 360 रियलटर्स**

अगर आने वाले सप्ताह में रेपो रेट इस बार भी स्थिर रहता है, तो यह हमारे लिए बेहद सकारात्मक साबित होगा। इससे हम अपने आगामी रेजिडेंशियल और कमर्शियल प्रोजेक्ट्स को मजबूती से आगे बढ़ा सकेंगे। होमबायर्स को किफायती फाइनेंसिंग विकल्प मिलने की संभावना बढ़ जाएगी, जो उनकी खरीदारी के आत्मविश्वास को और मजबूत करेगी। वहीं, अगर रेपो रेट में कोई कटौती होती है, तो इससे होम लोन की दरें और कम होंगी, जिससे खरीदारी को और भी प्रोत्साहन मिलेगा।

**सौरभ शर्मा, सेल्स डायरेक्टर, ट्राईसोल रेड**

नीरज शर्मा, मैनेजिंग डायरेक्टर इस्कॉन इंफ्रा रियलटर के अनुसार स्थिर रेपो रेट न केवल प्रॉपर्टी निवेश को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि हमारी बिक्री में भी वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेगा। हमें विश्वास है कि अगर इस बार रेपो रेट में कोई कटौती नहीं होती है, तो यह एक सकारात्मक संकेत होगा। ऐसे में ग्राहक बिना किसी वित्तीय दबाव के अपने सपनों के घर को साकार करने में सक्षम होंगे। अगर रेपो रेट कम होता है, तो इससे अधिक लोग घर खरीदने की दिशा में आगे बढ़ेंगे, जिससे बाजार में तेजी आएगी।

## पैन कार्ड में छिपी रहती है आपकी हर जानकारी, क्या आपको पता है?

हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है। यह कार्ड इनकम टैक्स डिपार्टमेंट द्वारा जारी किया जाता है। इस कार्ड में कार्डहोल्डर की कई जानकारी शामिल होती है इसलिए किसी अनजान व्यक्ति को पैन कार्ड और पैन नंबर नहीं देना होता है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि पैन कार्ड और पैन नंबर में कार्डधारक की कौन-सी डिटेल्स मेंशन होती है।

**नई दिल्ली।** पैन कार्ड (PAN Card) एक जरूरी डॉक्यूमेंट है। बैंक अकाउंट ओपन करवाते वक्त या फिर किसी सरकारी योजना का लाभ पाने के लिए पैन कार्ड देना जरूरी होता है। पैन कार्ड जितना जरूरी डॉक्यूमेंट है उतना ही इसे सिक्योर रखना जरूरी है। हमें हर किसी को पैन कार्ड की डिटेल्स नहीं देनी होती है।

दरअसल, कार्ड मे जो नंबर मेंशन होता है जिसे पैन नंबर भी कहते हैं उस नंबर में ही कई डिटेल्स छुपी हुई होती है। हम आपको बताने वाले हैं कि आपके पैन नंबर में कहां-कहां और कौन-सी डिटेल्स शामिल होती है।

**शामिल होते हैं ये डिटेल्स**

कार्डहोल्डर का नाम
कार्डहोल्डर के पिता/माता का नाम
डेट ऑफ बर्थ
परमानेंट अकाउंट नंबर (Pan Number)
कार्ड होल्डर के सिग्नेचर
पैनधारक की फोटो

यह भी पढ़ें: EPF Withdrawal: PF अकाउंट से पैसा निकालना हुआ आसान, यहां जानें स्टेप बाय स्टेप पूरा प्रॉसेस

**पैन नंबर में होती है ये जानकारी**

पैन कार्ड पर मौजूद संख्या में कार्डहोल्डर की कई जानकारी दी जाती है। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ही पैन नंबर जारी करती है। आप जब पैन कार्ड के आवेदन के समय जानकारी देते हैं उन जानकारी के आधार पर ही पैन नंबर तैयार होता है। वैसे पैन नंबर 10 डिजिट का अल्फा-न्यूमेरिक नंबर होता है। इसमें हर नंबर कुछ डिटेल्स को शो करता है।

पैन नंबर के शुरुआत के तीन अक्षर में A से Z तक वर्णमाला का होता है।

पैन कार्ड का चौथा अक्षर टैक्सपेयर की कैटेगरी शो करता है। यह बताता है कि कार्डहोल्डर किस कैटेगरी में शामिल है। उदाहरण के तौर पर अगर चौथा अक्षर C है तो इसका मतलब कंपनी है। हम आपको बताते हैं कि कौन-सा अक्षर किस टैक्सपेयर कैटेगरी को रिप्रेजेंट कर रहा है।

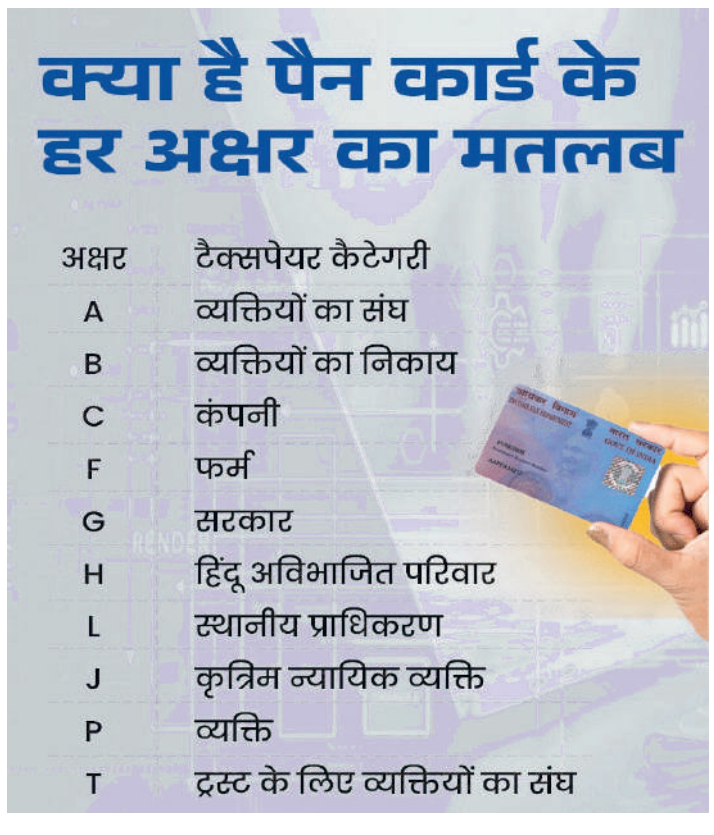


## ट्रेन में चाहिए लोवर बर्थ सीट, टिकट बुकिंग के समय जरूर अपनाएं ये आसान ट्रिक

भारतीय रेलवे में रोज लाखों लोगों सफर करते हैं। ऐसे में भारतीय रेलवे पूरी कोशिश करता है कि वह अपने यात्रियों का सफर आरामदायक बनाए। कई यात्री भारतीय रेलवे के कई नियमों से अनजान है। भारतीय रेलवे अपने सभी यात्री को सुविधा देता है कि वह अपनी बर्थ चॉइस बताएं। हम आपको इस आर्टिकल में भारतीय रेलवे के इस नियम के बारे में बताएंगे।

**नई दिल्ली।** ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों की संख्या की बात करें तो दिन में लाखों लोग ट्रेन से सफर करते हैं। लोकल ट्रेन के साथ पैसेंजर ट्रेन भी लगभग हमेशा भरी रहती है। ऐसे में कई बार लोगों को ट्रेन में वेटिंग टिकट लेकर सफर करना पड़ता है। कई यात्री को लगता है कि भारतीय रेलवे में सीट सेलेक्शन का ऑप्शन नहीं मिलता है। हालांकि, ये गलत है। हम आपको आज भारतीय रेलवे के एक ऐसे ट्रिक के बारे में बताएंगे जिसके जरिये आप भी कन्फर्म लोअर सीट पा सकते हैं।

**किस मिलता है लोअर बर्थ**

वैसे तो भारतीय रेलवे सीनियर सिटिजन को सबसे पहले लोअर बर्थ अलॉट करता है। जी हां, भारतीय रेलवे में रिजर्व लोअर सीट का कोटा होता है। यह कोटा केवल सीनियर सिटिजन के लिए लागू है। इसका मतलब है कि भारतीय रेलवे सबसे पहले सीनियर सिटिजन को लोउर बर्थ सीट देता है। रिजर्व लोअर सीट का कोटा केवल तब ही लागू होता है जब कोई सीनियर सिटिजन अकेले सफर कर रहा है या फिर एक साथ दो सीनियर सिटिजन सफर कर रहे हैं।

अगर दो से ज्यादा सीनियर सिटिजन एक साथ सफर कर रहे हैं तब लोअर सीट का रिजर्वेशन लागू नहीं होता है। अगर किसी सीनियर सिटिजन को अपर या मिडिल बर्थ मिला है तो वह टिकट चेकिंग स्टाफ से कहकर उसे चेंज करने की रिक्वेस्ट दे सकता है।

# चित्र और चरित्र में बसते हैं मर्यादा पुरषोत्तम प्रभु श्रीराम : ठाकुर संजीव कुमार सिंह

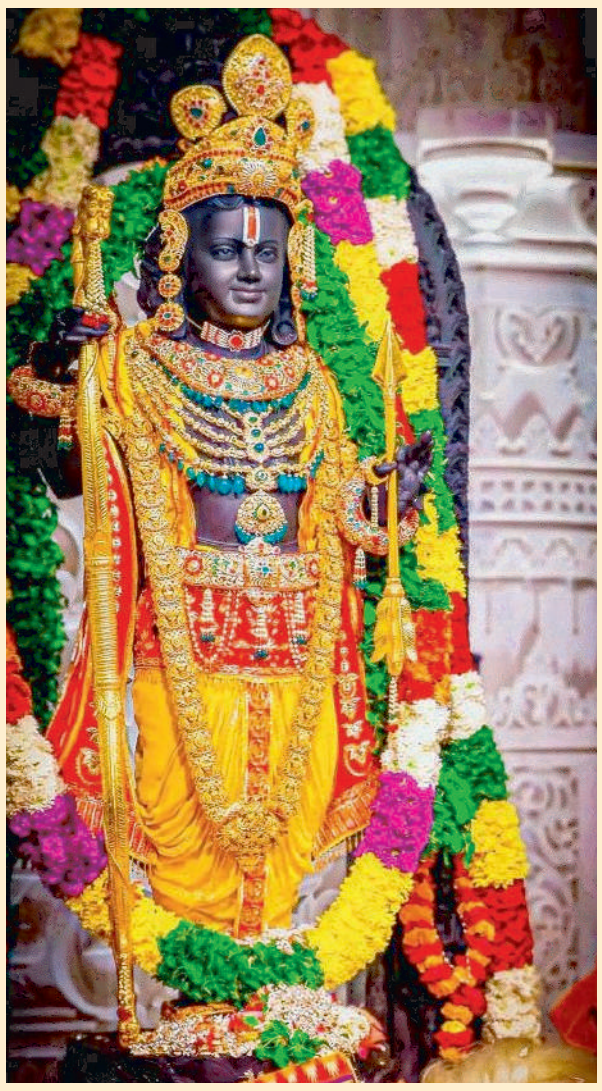

प्रभु के चित्र की पूजा के साथ-साथ उनके चरित्र का अनुसरण भी करना चाहिए तभी हमारा जीवन सुखमय होगा : ठाकुर संजीव कुमार सिंह

**आगरा,संजय साग़र सिंह।** रामायण के महानायक प्रभु श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है, जो धर्म, कर्तव्य और आदर्श जीवन के प्रतीक माने जाते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र त्याग, कर्तव्यपालन, निष्ठा, सहनशीलता-संयम, सच्चाई-न्याय, समानता-करुणा, परिवार-रिश्तों की महत्ता, स्वार्थ रहित कुशल नेतृत्व का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रभु, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र की मर्यादाओं के मार्ग का वर्णन करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी, अधिवक्ता ठाकुर संजीव कुमार सिंह ने कहा, श्रीराम एक ऐसा पथ है, जिस पर राम ही सदा चले, उनके जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम सृष्टि में ना कोई हुआ है और ना कभी होगा। प्रभु, निश्चित रूप से मर्यादापुरुषोत्तम है, उन्होंने सदैव ही मर्यादा में रहकर हर कार्य किया और न्याय, सत्य और धर्म के पथ पर आजीवन चलते रहे एवं सामान्य पुरुष की भांति जीवन के हर संघर्षों को अपनाया और मानव के रूप में आकर प्रभु श्रीराम ने सभी जनमानस का कल्याण किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन एक आदर्श व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का प्रतीक है, जिससे हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं। प्रभु श्रीराम ने पिता के वचन को निभाने के लिए राजसुख और राज्य का त्यागकर 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कर्तव्य और वचन पालन जीवन में सर्वोपरि होना चाहिए। उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोया, चाहे वह वनवास हो, या माता सीता का हरण हो, वे हमेशा चट्टान की तरह संयमित और शांत रहे। इससे हमें जीवन में संयम और धैर्य रखने की प्रेरणा मिलती है। भगवान श्रीराम ने अपने सम्पूर्ण जीवन में सत्य और न्याय का पालन किया। उन्होंने रावण जैसे अत्याचारी का वध कर धर्म की स्थापना की। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि सत्य की हमेशा विजय होती है और न्याय करना जीवन का एक आवश्यक मूल्य है।

श्री सिंह ने कहा, प्रभु श्रीराम ने मनुष्य रूप में मित्र, भाई, पुत्र, पति और माता-पिता हर नाते का सम्मान कर पूरी दुनियां को मर्यादा के मार्ग पर चलने का पाठ पढ़ाया। लेकिन वर्तमान समय में मित्र-मित्र न होकर शत्रु अधिक है, इस संदर्भ में भी भगवान श्रीराम ने मित्रता का उदहारण मानव जाति को दिया है। मित्र के रूप में, प्रभु श्रीराम के चरित्र का वर्णन शब्दो द्वारा संभव नहीं है। उनके दास संकट मोचन श्री हनुमानजी से उनकी मित्रता उच्चकोटि की मित्रता का स्थान पाती है। इसके अतिरिक्त प्रभु श्री राम ने कभी भी जाति के नाम पर भेद-भाव नही किया। वे सभी मनुष्यों को समान समझते थे। उनकी नजर में कोई छोटा या बड़ा नहीं था। इसका उदहारण भी रामायण में प्राप्त होता है। श्रीराम ने अपने मित्र निषाद राज गुहा का सम्मान किया उन्हें अपने कंठ से लगाया, केवट की भक्ति पर तो वे बलिहारी हो गए और जो तृप्ति उन्हें वनवासी माँ सबरी के झूठे बेर खाकर हुई वो तृप्ति उन्हें अवध और मिथिला के छत्तीस व्यजनों में भी प्राप्त नहीं हई। प्रभु श्रीराम ने विभीषण और वनवासी सुग्रीव जैसे साधारण व्यक्तियों से मित्रता कर समानता और करुणा का संदेश दिया। इससे हमें सिखने को मिलता है कि सभी का सम्मान करना चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

उन्होंने आगे कहा, स्वयं भगवन श्रीराम ने भी विषम परिस्थिति में धैर्य का सहारा लेकर आदर्श प्रस्तुत किया था। इसके लिए शास्त्रों में भगवान श्रीराम को आदर्श पुरुष कहा गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपने भाइयों, पत्नी, और माता-पिता के प्रति प्रेम और निष्ठा हमें बताता है कि परिवार और रिश्तों का जीवन में बड़ा महत्व है। उन्होंने हमेशा अपने प्रजा के हित को प्राथमिकता दी। अयोध्या लौटने पर उन्होंने 'राम राज्य' की स्थापना की, जो न्याय, समानता और खुशहाली का प्रतीक हैं। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक सच्चे नायक को निःस्वार्थ और परोपकारी होना चाहिए। श्री राम के जीवन के मर्यादाओं की ये शिक्षाएँ हमें एक आदर्श जीवन जीने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करती हैं। इसीलिए प्रभु श्रीराम की पूजा-अर्चना करने और उनके बताएं मर्यादा के मार्ग पर चलने से हर सनातनी को धैर्य का वरदान प्राप्त होता है। इससे व्यक्ति के जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दुख और संकट समय के साथ दूर हो जाते हैं।

# राजधानी भुबनेस्वर् में दुर्घटनाएं; हाइव ने कार को टक्कर मार दी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भुबनेस्वरः** पार्किंग में खड़ी एक कार को मिट्टी से भरे ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में कार चालक और एक यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा भुवनेश्वर के डमणा स्ट्रीट पर हुआ। घायल यात्रियों को कैपिटल अस्पताल में भर्ती कराया गया है।आज सुबह सड़के एक तेज रफ्तार मिट्टी ट्रक ने सड़क किनारे खड़ी कार को टक्कर मार दी।हादसे में कार में सवार यात्री और एक अन्य व्यक्ति घायल हो गए। घायलों को बचा लिया गया है और कैपिटल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में मिट्टी लोड होने से हाइवा का अगला हिस्सा टूट गया। पुलिस ने दुर्घटना लेन को जब्त कर लिया है और घटना की जांच कर रही है।

# बन्दे ने भारत ट्रेन पर पत्थरब हुआ

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भुबनेस्वरः** जानकारी के अनुसार शुक्रवार की शाम जलेश्वर-अमरदारोड रेलवे स्टेशन के बीच पचबाटीया रेलवे स्टेशन के पास पुरी हवाड़ा जा रही ट्रेन संख्या 22896 ने खड़गपुर को पार कर लिया ।हालांकि, अमरदारोड स्टेशन पार करने के बाद पचबटिया रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन की एक बगी का शीशा टूटा हुआ पाया गया, तो यात्री घबरा गये और इसकी सूचना मौजूद टीटीआई के राय को दी कर्मचारी तुरंत उक्त गेट पर पहुंचे और बदमाश का पता लगाने का प्रयास करते रहे, लेकिन जब कोई पता नहीं चला तो माना जा रहा है कि बदमाश मारपीट कर मौके से भाग गया।

# कोयला चोरी में पुलिस की भूमिका की जांच सीबीआई को : भाजपा के हाथ चुनावी में लड्डू

कार्तिक कुमार परिच्छा

**सरायकेला,** झारखंड के कोयलांचल धनबाद जहां की काले पैसे से बिहार एवं झारखंड की राजनीती संचालित होती आ रही है उसका का बड़ा खेल अवैध पैसा ही है । कोयला चोरी में में पुलिस संलिप्तता से जूडी एक याचिका पर विगत 5 साल में एक लाख करोड से भी ऊपर रुपए के कोयले की चोरी का आरंभिक जांच अब झारखंड हई कोर्ट ने सीबीआई को देने के बाद भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी तथा धनबाद सांसद बेहद खूश नजर आ रहे है । कोर्ट ने कहा है कि अफसरों की संलिप्तता पता लगने के बाद उनके खिलाफ एफ आई आर की जायेगी ।इस पर धनबाद के सांसद ने पुलिस अधिकारियों को फांसी देने की बात कह डाली है ।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री अपने एक्स एकाउंट में लिखा है कि भ्रष्ट अधिकारी यहां पोस्टिंग करवा कर कोयला चोरी में अंतर लिप्त होतेहै ऐसे में हाईकोर्ट द्वारा सीबीसी जांच करने का निर्णय स्वागत योग्य है । सांसद ढुल्लू महतो ने झारखंड उच्च न्यायालय द्वारा कोयला के धंधे में धनबाद में पदस्थापित रहे पुलिस अधिकारियों की भूमिका की सीबीआई जांच का स्वागत किया है। साथ ही कहा कि इस मामले की सीबीआई जांच उच्च न्यायालय की निगरानी में ही होनी चाहिए ।. दरअसल सांसद ढुल्लू महतो ने शुक्रवार को सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे. जहां उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट का फैसला सत्य की जीत है. साथ ही पूर्व पुलिस अधीक्षक को फांसी देने की मांग की.

धनबाद के पूर्व एस सपी संजीव कुमार के कार्यकाल में अवैध खनन में अरबों रुपये की लूट और वसूली हुई. सैकड़ों लोगों की जाने गयी. इसके लिए तत्कालीन एसएसपी जिम्मेदार हैं. उन्होंने कोर्ट से मांग की है कि उन्हें फांसी सजा दी जाए. धनबाद के इस सांसद ने कहा कि यहां पुलिस की वर्दी पहन कर पुलिस वालों ने अपराध किया गया है. सरकार को इस मुद्दे पर दर्जनों बार पत्राचार किया गया. लेकिन, कार्रवाई के बजाय उस पुलिस अधिकारी को प्रोन्नति पर प्रोन्नति दी जाती रही ।अब न्यायालय से ही उम्मीद है। इसके अलावा उन्होंने पूर्व एसएसपी पर कई गंभीर आरोप भी लगाये. साथ ही कहा कि सत्ताधारी दल का एक नेता पूर्व पुलिस अधीक्षक से सांठ-गांठ कर अपने यहां अवैध लोहा, कोयला गिरा कर कारोबार करता रहा. ऐसे कार्य में जूडे नेताओं पर भी कार्रवाई होनी चाहिए।

सांसद ने कहा कि झामुमो वाले कहते हैं कि हेमंत है तो हिम्मत है. उन्होंने बाघमारा विधायक रहते हुए कई बार सदन में कोयला चोरी, अवैध वसूली का मुद्दा उठाया. उन्होंने राज्य सरकार को चुनौती देते हुए कहा कि वो चाहे तो मेरे खिलाफ जांच करा लें. उनके खिलाफ कई झूठे मुकदमा हुए. लेकिन, आर्थिक अपराध का कोई मुकदमा नहीं हुआ है. प्रेस वार्ता में उनके साथ भाजपा नेता संजीव अग्रवाल, संजय झा, नितिन भट्ट, मिल्टन पार्थसार्थी भी मौजूद थे।

# एक शाम माताजी के नाम जागरण सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

**हैदराबाद** कापरा मंडल बालाजी नगर स्थित श्री आईमजी गोशाला के तत्वावधान में 'एक शाम गो माता के नाम' माँ भगवती के ग्यारहवां विशाल जागरण का आयोजन किया गया। अवसर पर रंगारंग डांडिया नृत्य भी किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष मंगलाराम पंवार व सचिव हुक्माराम सानपुरा ने बताया कि गोसेवार्थ जागरण आयोजित किया गया। गौशाला प्रांगण में माँ भगवती का विशाल पंडाल सजाकर पुरुष व महिलाओं द्वारा रंगारंग डांडिया नृत्य किया गया। तत्पश्चात पूजा-अर्चना व ज्योत प्रज्ज्वलित कर जागरण का आयोजन किया गया। अवसर पर गणेश वंदना के साथ भजन गायक राम कुंवर सैनी रामकुमार मालूणी ने राजस्थानी अंदाज़ में भजनों के पुष्प अर्पित किये। कार्यक्रम में पधारे सीरवी समाज पारसीगुटा बडेर अध्यक्ष मोहनलाल हाम्बड़, कोरेमुला बडेर अध्यक्ष कालुराम काग, सचिव डायाराम लचेटा, मल्लापुर बडेर अध्यक्ष तुलसाराम सिन्दडॉ , श्री आईजी सेवा संघ अध्यक्ष भगाराम मुलेवा,विशव मंगल गौशाला से शांतिलाल सुथार, मदनलाल शर्मा, दुलीचन्द शर्मा, आनंद शर्मा, अखिल भारतीय युवा संघठन से केसाराम सीरवी, भंवरलाल सीरवी, पुनाराम सीरवी,भोजन-प्रसादी के लाभार्थी किशनलाल राठौड़ सरस्वती ज्वेलर्स पॉट मार्केट सिकंदराबाद ग्रुप द्वारा

परिवार व अतिथियों का गौशाला के पदाधिकारियों व गोभक्तों ने शॉल, दुपट्टा से विशेष सम्मान किया। गोभक्तों ने दान-पुण्य राशि में बढ़-चढ़कर भाग लिया। भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी। अध्यक्ष मंगलाराम पंवार ने गोभक्तों को नवरात्रि की शुभकामनाएँ देते हुए दान-पुण्य करने वाले भामाशाहों का आभार जताया। कार्यक्रम में मंगलाराम पंवार, उपाध्यक्ष कालुराम काग, सचिव हुक्माराम सानपुरा, सहसचिव ढगलाराम सेपटा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार, चोलाराम हाम्बड़, डायाराम लचेटा, मोहनलाल हाम्बड़,भंवरलाल मुलेवा, बाबूलाल मुलेवा, मोतीलाल काग, पारसमल शर्मा,माधुराम चोयल, गणेशराम बर्फा, शंकरलाल बर्फा, गोपाराम मुलेवा, कालुराम काग चितल ,समस्त कार्यकारिणी सदस्य, नवयुवक मंडल के कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का विशेष कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। यू-ट्यूब पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण बी आर एस राजस्थानी मिडिया भगवान राम राठौड़, बबलू ने किया। महाआरती व सचिव हुक्माराम सानपुरा के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

# सांस फूलने की परेशानी से राहत देगे घरेलू इलाज, सावधान, सर्दी सर पर चढ़कर बोलने लगी है

बहुत से लोग गलतफहमी के चलते डिस्पेनिया (सांस फूलना) रोग को दमा रोग ही समझ लेते हैं ! लेकिन डिस्पेनिया (सांस फूलना) और दमा (अस्थमा) रोग में थोड़ा सा फर्क होता है। कई लोगों को गलतफहमी होती है कि मोटा होने की वजह से ही सांस फूलती है पर ऐसा कुछ नही है, पतले लोगो की भी ऐसे ही सांस फूलती है और इसका कारण हमारे शरीर में नही अपितु पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण, अस्वच्छ हवा में सांस लेना और गलत कार्यशैली हो सकती है।

**कारण-**

सांस फूलने का रोग मुख्यतः 2 कारणों से हो सकता है....

1. ज्यादा उम्र के लोगों को बारिश के मौसम में सांस की नली के पुराने जुकाम आदि रोगों के कारण या

2. दिल की धड़कन का काफी तेज चलने के कारण. !

सांस फूलने के प्रभावी और घरेलू इलाज़, उन वस्तुओं से जो आपके रसोईघर में चौबीसो घण्टे उपलब्ध रहती हैं...

**1. अंजीर**

जिन लोगो की सांस फूलती है, उनके लिए अंजीर अमृत के समान है क्योंकि अंजीर छाती में जमी बलगम और सारी गंदगी को बाहर निकाल देती है। जिससे सांस नली साफ़ हो जाती है और सुचारू रूप से कार्य करती है। इसके लिए आप तीन अंजीर गरम पानी से धोकर रात को एक बर्तन में भिगोकर रख दीजिये और सुबह खाली पेट नाश्ते से पहले उन अंजीरों को खूब चबाकर खा लीजिये। उसके बाद वह पानी भी पी लें। इसका प्रयोग लगातार एक महीने तक कीजिये। इसके प्रयोग से फर्क आपको खुद ही महसूस होने लगेगा।

**2. तुलसी (Basil) और सौंठ (Dry Ginger) का काढ़ा**

तुलसी, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाती है और श्वसन तंत्र पर बाहरी प्रदूषण और एलर्जी के हमले से रक्षा करने में समर्थ है। इसलिए जिनको भी सांस फूलने की या दमा की शिकायत हो उन लोगो को तुलसी से बने इस काढ़े का इस्तेमाल अवश्य ही करना चाहिए। इसके लिए आधा कप पानी में 5 तुलसी की पत्ती, एक चुटकी सौंठ पाउडर, काला नमक और काली मिर्च डालकर उबाल ले। ठंडा करके जब यह काढ़ा गुनगुना सा रह जाए तब इसका सेवन करे। नित्य प्रति इस काढ़े के सेवन से आपके सांस फूलने की समस्या जड़ से समाप्त हो जाएगी।

**3. अजवायन (Thymes)**

सांस फूलने की समस्या अक्सर श्वास नली में सूजन या श्वास नली में कचरा आ जाने की वजह से ही उत्पन्न होती है। श्वास नली को साफ़ करने का सबसे प्रभावी तरीका होता है– स्टीम या भाप लेना। भाप लेने से यदि श्वास नली में सूजन है तो उसमे आराम हो जाता है और कचरा भी

निकल जाता है तो इसके लिए आपको अजवायन पीसकर पानी में उबलनी है। फिर इस अजवायन वाले पानी की भाप लेनी है व इसे गुनगुना पी भी लें। क्योंकि अजवायन की भाप सूजन को खत्म और दमे और सांस फूलने की समस्या में राहत दिलाती है।

**4. तिल का तेल (Sesame oil)**

यदि ठंड की वजह से छाती जाम हो जाए या रात के समय दमे का प्रकोप बढ़ जाए और सांस ज्यादा फूलने लगे तो तिल के तेल को हल्का गर्म करके छाती और कमर पर गरम तेल की सेक करें। इस प्रकार आपकी छाती खुल जायेगी और आपको सांस फूलने की समस्या में राहत मिलेगी।

**5. अंगूर (Grapes)**

सांस फूलने व दमा की समस्या में अंगूर बहुत लाभदायक होता हैं। इस समस्या में आप अंगूर भी खा सकते है या अंगूर का रस का भी सेवन कर सकते हैं। कुछ चिकित्सकों का तो यह दावा है कि दमे के रोगी को अगर अंगूरों के बाग में रखा जाए तो दमा, सांस फूलने या कोई भी श्वसन सम्बन्धी समस्या में शीघ्र लाभ पहुंचता है।

**6. चौलाई (Amaranth) के पत्तों का रस**

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि चौलाई के पत्तों का ताजा रस निकालकर और उसमे थोड़ा शहद मिलाकर प्रतिदिन सेवन किया जाए तो अतिशीघ्र लाभ पहुंचता है। चौलाई के पत्तो का प्रयोग आप किसी भी रूप में कर सकते है। चाहे तो चोलाई के पत्तो का साग भी खा सकते है। चोलाई के पत्ते इस समस्या में रामबाण औषधि है।

**7. लहसुन (Garlic)**

लहसुन भी सांस फूलने की समस्या में अत्यंत लाभकारी औषधि का कार्य करता है।

इसके लिए लहसुन की 3 कलियों को दूध में उबालना है और फिर उस दूध को छानकर सोने से पूर्व पीना है। याद रहे इसके बाद कुछ भी न खाये या पिए। कुछ ही दिनों के निरन्तर प्रयोग से आपको इसके चमत्कारी परिणाम देखने को मिलेंगे।

**8. सौंफ (Fennel)**

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि सौंफ का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आएगी ही नही। क्योंकि सौंफ में बलगम को साफ करने के गुण विद्यमान होते हैं। यदि दमे के रोगी और सांस फूलने वाले रोगी नियमित रूप से इसका काढ़ा इस्तेमाल करते रहें तो निश्चित रूप इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

**9. लौंग और शहद**

लौंग और शहद का काढ़ा पीने से श्वास नली की रुकावट दूर हो जाती है और श्वसन तंत्र मजबूत बनता है। इसके लिए चार-छः लौंग को एक कप पानी में उबाल ले और फिर उसमे शहद मिलाकर दिन में तीन बार थोड़ा थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे।
RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023